

॥ श्रीः ॥

प्रवास-कुसुमावली

द्वितीय गुच्छ ।

मरुदेशीय, अग्रवशी-

शिवचन्द्र भरतिया,

उपनाम

“चन्द्र कवि” विरचित ।

“सवधा व्यवहृतव्ये तुतो व्यवचनीयता ।

यथा स्त्रीणा तथा वाचा साधुत्वे दुजनो जन ॥”

(राजनियमानुसार सर्व अधिकार सुरक्षित हैं)

बम्बई,

“ गुजराती ” प्रेसमें मुद्रित ।

सवन् १९६४, शके १८२९

कीमत छ आना ।

३९४०

निज धर्म-वश जाति-

स्वदेश-भाषा-सुधार करना ही ।

सबका कर्त्तव्य सदा

परहित किसको मृपुण्यकर नहीं ? ॥

दिग्दर्शन ।

निज कवित्त केहि लाग न नीका ?

सरस होऊ अथवा अति फीका ॥

जे पर भणित सुनत हरखाहीं,

ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥

—तुलसीदास ।

गत वत्सरम जब इसका प्रथम गुच्छ प्रकाशित हुआ तब मेर प्रस्तावन अनुसार, गणतन्त्रात्मक विशुद्ध हिन्दीकी कविता अल्प और ऐसी कविताना प्रचार भा अप्रचर, निवाय शिरालिखित महात्माके वचनानुसार रसिकजनाना भी अभाव—इन कारणोंसे उसके सादर स्वीकारमें कुछ बुझ गया थी । जो सस्वतरी कविताने ममता है वेही हम कविताना आदर कर सकते हैं, और जो पुरान दमकी कविताने प्रेमी ह उई तो इसके पढ़ने हीमें दिवत होती है तब वे इसका कैसे आदर कर सकग ? तथापि आजकल हम और हिन्दीप्रेमियाना चित्त आर्काषित हुआ है इतना ही नहीं, वरच कार्यानागरीप्रचारिणी सभाने भी इस निषयमें एक रेखुल्शन पाम कर दिया है, तथा अन्यान्य काव्यानुसारी महाशयान प्रथम गुच्छका सादर स्वीकार कर अभिनन्दन किया, जिसका सारास अयन उद्धृत है—अतएव इस द्वितीय गुच्छन निमाण करनेमें शुभको विशेष उत्साह हुआ ।

जिस समय राष्ट्रभाषा हिन्दी बननका और वह वैसी बन जाय वरातक भिन्न भिन्न भाषाय देवनागरी लिपिम गिखी जानेने लिये आन्दोलन हो रहा ह, नागरी प्रचारिणी सभाय इसकी उन्नतिके लिये दब परिश्रम है और अन्यान्य बंगाली महाराष्ट्र इत्यादि अन्य भाषानभिन्न महातुभाय भी हिन्दीकी ओर झुके हैं—तो क्या अब

गणमात्रासह कविता देशीय विगुह हिन्दीके महापीठपर प्रतिष्ठा नई होनी चाहिये !
 किसी कविने कहा है कि—

ते धन्यास्ते महात्मानस्तेषा लोके स्थिरं यशः ।
 यैर्वा निबद्धानि काव्यानि ये वा काव्येषु कीर्तिताः ॥

अथान् जिहोंने काव्यानिमाण किये हैं अथवा जिनका काव्यमं वणन हुआ है वे
 धन्य हैं, वे महात्मा हैं और लोकमं उन्हींका यश स्थिर है—इसमें क्या मन्देह है ?
 यश, अथ, भग्न और उपदेशको करनेवाली मित्राय कविताके अन्य कौन है ?
 जगत्समं कविता नहीं होती तो वेद, उपनिषद्, शास्त्र, स्मृति, पुराण आदि कल्प
 नातीत सैकड़ों ग्रन्थ आज हमको कहासे प्राप्त होते ? कविता ही एकमात्र हमारे देशकी
 कीर्ति लम्बी, समृद्धि, धर्मस्थिति, ज्ञानप्रदायिनी और कल्याणकारीणी है । कविता
 देश प्रभावस आज—पृथ्वीराजके समयकी, कबीरानानकके समयकी, मरदास
 तुलसीदासके समयकी और अन्याय महात्माभाके समयकी हिन्दीभाषाका परिचय
 होने उस कालकी भाषास्थितिका दिग्दर्शन होता है ।

‘ कालस्य कुटिला गति इती नियमावुसार जैसी जैसी इस देशकी अवनाति
 हाती गई वैसी वैसी परिस्थितिकीभी भिन्नता होती गई । एक दिन सबत्र देशभर
 मानृभाषा गीर्वाणना प्रचार था, पीछे थोड़े ही कालम प्राकृतका प्रचार हुआ, होते
 होते अनेक भाषायें बनीं । बनता बनती दस बीस मील परभी उनमें भिन्नत्व हो
 गया ॥ कहिये, अब किस प्रकार भाषैक्य हो ? भारतके अतिरिक्त अन्यान्य
 देशोंकी ओर देखा जाय तो भाषैक्यसे सचका दृढ़तभाय सहज परिस्फुट होनेसे
 कैसा परम्पर पश्यत है ?

आज हमारे सिर पर विश्वविभ्रमप्रचारिणी शक्तिशालिनी न्यायशीला गवर्नमं टका
 शीतलउत्र है ता ऐसे शान्तकालमें हमारा परम कर्तव्य है कि प्रथम हम अपनी
 मानृभाषाका सुधार करें । हिंदुस्थानकी भाषा एक मात्र हिन्दी ही है, और यथायोंचार
 वणमाला भी एक मात्र नागरी है । अब यथावचि उसे कोई उद् उद् कहे, कोई ब्रज करे,

कोई खड़ी कहे और कोई मिथ्या कहे—हे तो हिन्दीकी हिन्दी ही। जिस भाषामें कविता प्रगल्भ दशाको पहुँच जाती है वह भाषा परिष्कृत होके प्रधान बन जाती है। संस्कृतको तो रहने दीजिये—जरा बगदा, मराठी और गुजरातीकी ओर तो देखिये, कैसी उन्नत हैं ? जैसी जैसी इन भाषाओंकी कविता प्रचलित भाषामें आविष्ट होती गई वैसी वसी अधिराधिक अधिकृत होती हुई आज प्रधान बन गोर वान्वित हो रही है। ईश्वर कभी न कभी हमारी इस दुमारी भाषाहीना सुगंध हिन्दीको भी भावपूर्ण साहित्यालङ्कृत कवितासे विभूषित कर प्रौढा और प्रगल्भ करेहीगा। क्या कि—“ कालो लय निरवधि निगुल धरित्री ” काल निरवधि है और पृथ्वी निगुल है—इस भवभूतिनी उत्तिपर हमारा पूर्ण विश्वास है।

उस पतितपावन जगप्रियासका कोटिश धन्यवाद है कि इस स्थलवर्णनार्थक प्रयासकुसुमावलीका द्वितीय गुच्छ मेरे जैसे दोहदविज्ञानहीन अकुशल मालानाथके हाथ प्रेषित कराने अपने चरणारविन्दपर अर्पण कराया। वैसे ही प्रस्तुत प्रेमी महोदयगणका धन्यवाद है कि जिहाने इसके प्रथम गुच्छका सादर स्वीकार कर सुखे उत्साहित किया। इति शम् ॥

इन्दोर सिटी,
१५-६-०७

परमविनीत—
शिवचन्द्र भरतिया।

Poets must be like Byron
 That star of Liberty—
 Whose pen solely devoted
 To the noble Greece
 Shattered that nation's
 Shackles from the Ottoman yoke
 Extol thy country—"Ashak"!
 Guide, cheer and assist it
 Poets must have at their heart
 One grand aim to serve their native country

Ashak's G L chapter II

कवि अवश्य ही बायरन जैसा होना चाहिए जो स्वतंत्रतासिंहासन था, जिसकी लेखनी
 भयंकर ग्रीस की स्वतंत्रता समाप्त थी, जिसने ओटोमन लोगोका धुरसे परत
 राज्यके बंधनको नष्ट किया।

आशक ! तू अपने देशकी तारीफ कर, उसका विनता है, उसको उत्साह
 और मदद दे।

अपने देश की सेवा करनेका बड़ा भारी व्रत कवियोंका हृदयमें अवश्य
 होना चाहिये।

॥ श्री ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

मगलद्वादशी ।

(आया)

ॐकाराकृति जग जो, इच्छामात्र स्वय बना सारा ।
नमन करू मै उसका, श्रम हरने जोड हाथ मदा ॥
मोह मिटाने दी हे, भारत हमको प्रधान पुण्यधरा ।
भवतारक ईश्वरने, नमन उसे बारबार सदा ॥
गति है जहा हमारी, उस मिट्टीको सदा नमस्कार ।
वन, गिरि, मारिता, मारुत, जलान्न, सबको प्रणाम सदा ॥
तेज प्रभाव जिनका, क्या था जगमें विशाल विम्यात ? ।
वाक्पति थे वे कैसे ? पूर्वज-उनको प्रणाम सदा ॥
सुधबुध जिसने हमको, दी-बह मापा नमू सुधासार ।
दे ऐक्यभाव करती, सुधार सबका स्वदेशम्ल ॥
वाणी प्रधान जगमें, हृद्वावार्थप्रकाशका मयूरा ।
यहि है मगलद्वात्री, हमपर होओ प्रसन्न सदा ॥

चिनयपोडशपदी ।

(वसन्ततिलका)

है विश्वकीर्तिजननी, जननीतिसारा,
धारा सुधारसकरा, कवितासुधारा ।
भारा वही कटुतरा यदि भावहीना,
दीना न हर्ष करती, कभि हो सुलीना ॥

है काव्य सुन्दर जहा रमणीयताकी,
सीमा कहीं न जगमें निज एकताकी ।
है काव्य नव्य यदि वीररसप्रधान,
देशानुराग करता सुखसन्निधान ॥

है धन्य देश जिसमें कवि काव्यकारी,
होते स्वदेश-हित चिन्तक पुण्यकारी ।
है काव्य जीव सबका श्रमदुःखहारी,
गाते जिसे सब कहीं कविताविहारी ॥

हे रम्य भव्य कविते ! ललितानुरागे ।
कल्याण शीघ्र कर भारतका अभागे ।
हो तू यहा भकट, भाव दिखा नवीन,
हिन्दीसुधार कर तू श्रष्ट हो प्रवीन ॥

॥ श्री ॥

प्रवास-कुसुमावली ।

द्वितीय गुच्छ ।

श्लोक ।

मालव वर्णन ।

उपजाति

इन्दोर है मालव राजधानी,
वही हमारी बसती पुगनी ।
किया यहा आकर फेर बास,
परन्तु था शेष अभी प्रजाम ॥

शार्दूलविक्रीडित

कैसा मालव था प्रसिद्ध जगमे पुण्यप्रतापी महा ?
कैसे बाग नृप प्रजाप्रिय हुए देशोपकारी यहा ? ।

१ मालवकी राजगद्दी, इसकी सीमा ऐसी है—उत्तरमे मेवाड और राजपुताना, दक्षिणमे विन्ध्याद्रि और छानदेश, पूर्वमे मध्यप्रदेश और पश्चिममे गुजरात । यह भूमि विन्ध्यपर्वतके दक्षिणभागवर्तिनी है । पर्वतके ऊपरका जमीनको “माल” कहत हैं, इसी लिये इसका “मालव” नाम हुआ है । २ बाकी । ३ प्रजाके प्यार ।

श्रीमद्विष्णु सार्वभौम नृपकी सत्कीर्ति कैसी अहा !

राज भोजें समान कौन नृप था काव्यानुसारी कहा ? ॥ २

यसततिष्ठा

कैसी पुरी रुचि उज्जयिनी यहा थी ?

सार्मेन्त ये नृप जहा बहु अश्व हाथी ।

क्या थी विशाल जगमे, उसके समान—

कोई न थी अतुल वैभवं शोभमान । ॥ ३

सिप्रा जहा विमल गंधवती-प्रवाह—

सयुक्त थी उपवनीश्रित गर्न्धवाह ।

देता सुगन्ध, जन ये सन खन गजी,

प्रख्यात थी गगनचुम्बित सौध-रंजि ॥ ४

१ श्रीमान् विक्रम राजाको हुए लगभग दो हजार वर्ष हो चुके हैं । २ धारा पुरीका
अन्यात एक राजा—जिसे होने लगभग नौसौ वर्ष हुए हैं । ३ कवितामें प्रीति
रगनेवाला, कविताप्रेमी । ४ सार्वभौमको कर देनेवाला मांडलिक राजा । ५ अनु
पम पैमवसे शोभनेवाली । ६ इस नामकी नदीकी धारा । ७ बगीचोंमें घूमा
हुआ । ८ वायु, हवा । ९ आकाशसे मिली हुई, सबसे ऊंची । १० राजमह
लकी कतार—पत्ति । एक दिन यह नगरी भारतवर्षकी अद्वितीय राजधानी थी—इसी लिये
इसको भासपुरी मानी गई है । यद्यपि वहां इस वक्त कोई प्राचीन चिह्न याकी नहीं है
सांभी श्रीमहापालके पवित्र दर्शनोंसे उसका स्मारक बना हुआ है ।

उपजाति

निराजते थे स्वयमेव ईश,
धरे हुए पुरन चन्द शसि ।
वहा सदा दे सनको उजाला,
अन्वर्थ की थी नगरी विशाला ॥

मन्दाक्रान्ता

कैसा राजा विनयनत था, पूर्ण विद्या-निधान,
मानी, न्यायी, परम सुरुती, विष्णुमार्क प्रधोन ? ।
लक्ष्मी, विद्या, सरस कविता थीं जहा एक-भाव,
देशोद्धारी सकल जगमें पूर्ण था यत्नभाव ॥

१ महाकाल शिव—रघुवरा काध्यमें कालिदासजीने लिखा है कि, “असौ महाकाल-निकेतनस्य वसन्तदूरे बिल चन्द्रमाले ॥ तमिस्त्रपञ्चेऽपि सह प्रियाभिर्ज्यात्मावतो निर्विशति प्रदोषान् ॥” अर्थात् यह राजा चंद्र हीस पर है ऐसे महाकाल शिवजीक मन्दिरके समीप रहता है, इस लिये कृष्णपक्षमें भी प्रियाओंके साथ चांदनेमें प्रदोषशाल-रात्रिका प्रयम-भाग-व्यतीत करता है। इसीका यहाँ अनुलक्ष्य किया गया है। २ यथार्थ, जैसा “विशाला” नाम है वैसी विशाल अर्थात् बड़ी। ३ उच्चयिनी—यह पुरी बहुत बड़ी थी इस लिये इसका नाम “विशाला” भी था। ४ मुख्य। ५ देशका उद्धार करनेवाला। ६ जिसका प्रभाव—तेज। अत्यन्त रोदकी बात है कि ऐसे पुण्यप्रतापी राजाका इस वक्त कुछभी इतिहास उपलब्ध नहीं है।

शारङ्गविक्रीडित

वैसा भोज हुआ प्रसिद्ध जिसकी धारो पुरी थी यहीं,
देता था सुनके नवीन कविता लारों रूपाया वही ।
विद्या-वैभव नीतिपूर्ण जिसने सर्वत्र की थी मही,
कोई भूप हुआ न फेर जगमें प्रख्यात ऐसा कहीं ॥

७

वसन्ततिष्ठका

श्री कालिदास कवि^१ रत्न यहीं हुआ है,
वाणी-मुधोरम यहीं जिसका बहा है ।
ये सभ्य, थी नृप सभा, नये रत्न भारी,
ये चारुदत्त सम लोक परोपकारी ॥

८

१ इस वक्त जिसको “धार” कहते हैं वह । २ विद्या, ऐश्वर्य और न्यायसे पूरी । ३ कवियोंमें रत्नश्रेष्ठ । ४ वाणीका अमृतरूपी प्रवाह=कविता अर्थात् रघुवश, शाकुन्तल, मेघदूत आदि काव्य यहीं बने थे । ५ “धन्वन्तरि क्षपणको अमरसिंहशकुन्तेतालभपटकरपरकालिदासा ॥ स्थातो वराहमिरो नृपते सभाया रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य ॥” धन्वन्तरी, क्षपणक, अमरसिंह, शकुन्तल, घेतालभ, पटकर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि—ये नवरत्न महागान विक्रमकी सभामें विद्यमान थे । ६ यह एक उज्जयिनीमें बना घनिक था, इसने परोपकारमें अपना सारा धन लुट्ट दिया था । शूद्रक कविने इस पर “मृच्छकटिक” नामक नाटक लिखा है । देवनेही योग्य है ।

पृथ्वी

वृत्तान्त सम थे कडे, अनैय था जिन्होरा हिया,
स्वधर्म मगका हरा, कर लगा बुरा जेजियाँ ।
हरी नृपतिरैन्यका, छल विचित्र भारी किया,
निपात कर भारत प्रजल हो सभी ले लिया ॥

११

शादलविनीडित

होते ना गुरु गमनासे अथवा राजा सिवाजी यहा,
सिन्हे, हुल्कर, वेगवेगिक कभी होते बुरेहाल हा ।

१ यम, काल । २ अन्यायी । ३ हिंदुओंको मुसलमान बनना अवश्य होनेक लिये
औरंगजेबने इस नामका एक मझ भारी कर लगाया था । ४ मांडलिक राजाओंकी
वेष्टीके साथ शादी करते थे । ५ आखरी गिरना । ६ यह सिवाजी महाराजके गुरु थे ।
सिवाजीने इनको अपना सय राज्य दान कर दिया था, तथापि इन्होंने उसको नापिस
करके सिर्फ अपना चिक भगवा झंडा-पताका कायम रक्खा । ७ यह हिंदुपदपाद
शाहीके सहायक प्रभावशाली धर्मसरपंच सताराके छत्रपति राजा हुए । इनका
जन्म सन् १६२७ में और मृत्यु सन् १६८० में हुई । ८ इसके आदि पुरुष रानोजी
राव सिद्धिया हुए । सन् १७४० से अब तक इनका गादी म्यालियरमें विद्यमान है ।
९ आदि पुरुष महारजी होलकर "होल मुहम" गावके रहनेवाले थे, इनकी गादी
सन् १७३३ से मालवेमें आजतक विद्यमान है । १० इस प्रतापी महाराष्ट्र प्राकण
खानदानका आदि पुरुष "बाताजा विश्वनाथ" था, जिसकी मृत्यु १७२० में हुई ।
पेशवाई सन १८१८ तक प्रचलित रही ।

जाता धर्म, न भारतीय रहता । कैसी दशा देशकी—
क्या होती फिर ? कौन जान सकता लीला भला ईशकी । ॥ १२

होते ना उस वक्त होलकर वे मल्हारजी, मालना—
आता हाथ न, दूर होते तुरकी-सत्ता कभी ना लवा ।
सिन्दे मोहदजी न शूर बनते “पाटील बाँवा” वही—
होते रयात न, छीनते न यदि वा इस्लामियोसे मही ॥ १३

इन्दोर राज्य-वर्णन ।



अहल्या बाई थी शुभ कुलनधू होलकरकी,
चलाई थी सत्ता पति निन सदा राज्य-भरकी ।

१ हिन्दू । २ इनका जन्म सन् १६९३ में और मृत्यु सन् १७६६ में हुई ।
३ मुसलमानानी अमलदारी । ४ थोड़ीसी भी । ५ इनका जन्म सन् १७४३ में और
मृत्यु १७९४ में हुई । यह बड़े पराक्रमी थे । पानीपतकी लड़ाईमें लगे हो गये थे
६ पेशवाकी तरफसे इनको यह पदवी मिली थी । ७ यह मल्हारराव होलकरकी स्त्रिया
अर्थात् पुत्रवधू और खडेरावकी रानी थी । इनका पति सन् १७५५ में युद्धमें स्वर्ग
वासी हुआ तब इनके खशुर मल्हारराव विद्यमान थे । उनके पीछे इन्होंने सन् १७६७
से १७९५ तक बहुतही धमनीतिसे राज्य चलाया । सन् १७७० में इन्होंने एक छोटेसे
गावको इन्दोर शहर बनाया था । ८ सष होलकर राज्यकी ।

निया भागी नान, प्रत नियम पृजा निवि की,
बनी साश्रादेनी, प्रभु विन नहीं अन्य मुन की ॥

१४

शार्लविषीहित

कैसे थे यज्ञेन्तगप पटु थे ? सग्राममें हाथी—
जानी बात कभी न, कायम गरी गानी “सुभेदार” की ।
सिन्हे मार हटाय दू कगके, जो पेजेवासे लडे,
होते थे सुनतेहि नाम जिनका गेंयें सभीके रखे ॥

१५

भुजगप्रयात

जयाजी तुकोजी महागज, भूप—
हुए मालवेमें अभी जो अर्नूप ।

१ इनका जन्म सन् १७९७ में और मृत्यु सन् १८११ में हुई । २ पेशवाकी
ओरसे महारराव मालवाके सूबा हुए थे तबसे इनको सब “सुभेदार” कहते थे ।
३ दौलतराव सिन्धियाने इनका राज्य छीन लिया था । फिर इन्होंने खुद सेना इकट्ठी
करके सन् १८०१ में अपना राज्य वापिस लिया । ४ इसके अनन्तर थोड़ेही समयमें
सन् १८०७ में पेशवाके साथ युद्ध हुआ उसमें उनके साथ जोरसे लड़कर उनको
परास्त किया । ५ यशवतरावका । ६ इनका जन्म सन् १८३३ में और
मृत्यु १८८६ में हुई । यह दत्तक आवे थे इनका पूव नाम “भागीरथराव” था ।
७ “नरा जन्म और मृत्यु महाराजा जयाजी रावके साथ साथ हुई । थोड़ेही दिनों
अंतर रहा । ८ निरुपम, तुलनाहीन ।

हे योग्य, वर्महरे वा युवराज मान,
छोडा नृपासन, वशीं रणुके समान ॥

१९

उपजाति

वे नर्मदाके अब तौर जा वसे,
निवृत्त होके सब कामकाजसे ।
देके उन्हे ईश्वर पूर्ण ज्ञान्तता
करो मनीषा सकलार्थ-सगता ॥

२०

वसन्ततिथिका

द्वार हो खिलैत दी, युवराज भूप—
माने गये, नियत कौन्सिल हो अनूप ।
होना प्रेयन्ध, जन लें नृप योग्य होवे,
ले सम्मति त्रिटिशकी प्रभुतौ चलाने ॥

२१

१ ४वष कुदल धारण करनेके लिये योग्य, तरुण । २ राजकुमार, राजपुत्र ।
३ जितेन्द्रिय, जिसने इन्द्रियासौ जीता है वह । ४ वह भगवान् रामचन्द्रके परदादा थे
और दिलीपके पुत्र थे । कालिदासने रघुवशमें लिखा है कि, “न हि सति कुलधुर्ये
सूयवश्या गृह्याय” कुलको चलानेवाला पुत्र होने पर सूयवशी कभी घरमें रहते नहीं ।
५ ता० ३१ जनवरी सन् १९०३ को राज्यका इस्तिफा देके अलग हुए । ६ सब अध-
घन मानादिक जिसमें मिले हुए हैं ऐसी । ७ सावभौमअमेज सरकारकी तरफसे ता० ३१
जनवरी १९०३ को राज्यपद युवराजको दिया गया उसका खर्चाता । ८ विचारकोंकी
सभा । ९ कारोबार । १० अमेज सरकारकी । ११ राज्यशासन ।

शार्दूलविक्राडित

देने शिक्षण योग्य, बाल नृपको, दे हाथ अप्रेजके,
विद्या नीति पढाय शिक्षित किया कालेजमें भेजके ।
राजा बालक है परन्तु उनकी प्रज्ञा बड़ी तेज है,
क्या होता शिशु सिंहा हरिणसा? कैसाभि निस्तेज है ? ॥ २२

भुजगप्रयात

सवाई तुकोजी महाराज नाम,
यशस्वी जिन्होका, करू मैं प्रणाम ।
महाराज भाँवी यहाके, प्रभाँवी,
प्रजामाव-भावी, बनो सत्त्वभावी ॥ २३

वसन्ततिलका

देवो महेश इनको अमित प्रताप,
कम्पायमान रिपु हो सहके न ताप ।
प्रच्यात हो विमल कीर्ति महाप्रभार,
पालो प्रजा, बन चिगायु पवित्र-भाव ॥ २४

१ छोटे महाराजको । २ "केपटन फोर्ब्स" और "पारसीदाइड" बगैरह अप्रेज ।
३ डेली और मेओ कालेजमें । ४ बुद्धि । ५ बालक । ६ तेजहीन, निर्बल । ७ होनहार ।
८ प्रभावशाली, तेजस्वी । ९ प्रजाके भावमें जिनका भगव मिला हुआ ऐसे । १० अच्छे-
बभावके । ११ पुद्गल है भाव जिनका ।

महू-वर्णन ।

वसन्ततिलका

हैं छावनी निक्टही महुको प्रधान,
सेनो सितौसित अहा विविधै-प्रमान ।
है वस्ति चालिस हजार शुमार सारी,
हैं मारवाडि जिसमें धनिकोर्थकारी ॥

३०

उपजाति

परन्तु विद्यो-विमुख-स्वभाव,
हैं मारवाडी जन निर्ध्रभाव ।
न जानते रीति कुरीति बैसी ।
ब्रिया बनी हैं अति मृढ बैसी ॥

३१

मालिनी

कन उचित धर्नेगे सीख विद्याविचार ?
कय अधिः बर्नेगे अर्युत श्रीप्रचार ? ।

१ पंज । २ गोरी और काली । ३ न्यारे -यारे प्रकारकी गिनतीकी । ४ धनवान्
भार ध्यापारी । ५ विद्या सीखनेमें मुँह मोडनेवाले । ६ तेजहीन । ७ धनवान् । ८ धनका
प्रचार करनेवाले ।

मन्दाकिनी

गाड़ी जैसी पवन चपला जा घुसी "वोगटे" में,
आया यात्रा त्रगित कैरिहा हमपथा हनेमें ।
आने जाने परशुरामने माग्ये बाण मिद्ध,
गोना था जो विरग गिरिमें नैचंगन्ध्र प्रमिद्ध ॥

३९

शादू विनाशित

क्या वैज्ञानिक शक्ति एक दिन थी सर्वोच्च भारी, तथा
जो "शापोन्पि" वा "शैगन्पि" यहा विज्ञान निर्यात था ।

१ हवाके समान वेग है निम्नका ऐसी । २ बड़े बड़े पर्वतके शिखर खोदके
जागगाडा जानेके लिये जो रास्ता बनाया गया है वह "युगदा", विवर । ३ था
कालिदास कविरा वर्णन किया हुआ । ४ हिमालयके उत्तरकी तरफ मानस सरोवरमें
हमारे जानेके लिये पर्वतके शिखरमें जो मार्ग किया हुआ है—वह । ५ परशुरामने । ६
नैच पर्वतक शिखरमें—यहा परशुरामने बाण मारकर आरपार रस्ता बनाया था । ७ नैच
पर्वतमका रत्र विवर, युगदा " हमद्वार मृगुपतियशोवर्त्म यत्नैचरत्रम् " ऐसा कालिदा-
सने लिखा है । यह शिखर हिमालयके निकटवर्ती है । ८ विज्ञान—शिल्प, कारीगरी, पदा
वैज्ञान—निम्नो अंग्रेजीमें "Science" सायस कहते हैं—उसके सधधकी । ९ सबसे
उची, श्रेष्ठ । १० शापसे । ११ बाणसे—अर्थात् "चत्वारश्चाप्रतो वदा पृथत सशर धनु ।
इदं मात्रामिदं क्षान् क्षापादपि शरादपि " अर्थात् आगे चारों वेद, पीछे बाण लगा हुआ
धनुष्य ऐसा यह माद्वतेन और क्षान्तेन शापसे और बाणसे समथ है ।

मदामाता

आने गाड़ी पुलपर जय प्रान्तिका भाग भारी,
वीरे लगा उभय तटका दृश्य चित्तापहारी ।
मानो होके मिथिलै-शिथिला, नर्मन्त धार बीच
छाया द्वाग प्रतिष्ठति बना, जा रही चित्रें रौच ॥

४३

मालिना

जिस समय तुमोजी भूप थे नियमान,
उस समय सुला है सेतु लम्बायमान ।
सुगन्ध रुचिर कैसा काल था भासमान ?
अत्र कठिन वही है कालका कालमान । ॥

४४

ॐकारनाथ-मान्धाता वर्णन ।

उपजाति

ॐकारनाथ प्रभुका पवित्र,
समीप है मन्दिर चारु-चित्र ।

१ किनारोंकी दृढ़ मध्यभाग । २ चित्तको हरण करनेवाला, सुन्दर । ३ मद मन्द,
धोमा धामा । ४ अक्स, बेमेराके काचके ऊपर जो प्रतिविम्ब पड़ता है वह 'फोकस' ।
५ तसवार, 'फोटो' । ६ रुबा । ७ अनुभवम जानवाला, दाखनेवाला, चमकाला । ८
समयका परिमाण । ९ सुन्दर है चित्र जिसका वह ।

हाहा ! काल ! विचित्र शक्ति महिमा तेरी, तुही काल है,
हा कैसा ! उस काल-काल निभुका तूही महाकाल है ? ॥ ४८

मालिनी

विमल जल भरा है नर्मदाके किनारे,
उड़ल उड़ल भारी मच्छिया जोर सारे।
समल जन नहाके, भक्तिसे गा चरित्र,
शिर-चरण चढाते नीर, होने पत्रि ॥ ४९

वस ततिलया

श्रीसिद्धनार्य-शिर-मन्दिर ओ निशैर्णि,
दूदा उजाड गिरि ऊपर है विकीर्ण ।
प्रासाद भिर्ह-नृपका गिरिमयवर्ती,
सोहे नितान्त पर्णनीयि तदान्तर्प्रेती ॥ ५०

मालिनी

अधिकतर सताते यात्रियोंको पुजारी,
द्विज पर नहिं होते तुष्ट ले दान भारी ।

१ सहार कर्तो । २ कालकाभी सहार करनेवाला । ३ बड़ा काल । ४ यह पुरातन
मन्दिर उत्तरीय पहाड़ी पर है । ५ पुराना । ६ निरुपद्रु हुआ, । ७ राजाका महल । ८
भील जातिके राजाका । ९ पहाड़के । १० यात्राके मार्ग । ११ तटके समाप ।

शब्दलविकीर्तित

हर्ष आय इटागमी निकटही, आया जवल्पर वा,
सायमाल हुआ चिगाग जल्के गाडी चली भीगवा ।
हो माणीकपुर प्रयाग ठहरी, मध्यान्ह या रातका,
भारी भीह वहा, प्रन्ध कुठ ना देखा किसी रातका ॥

५४

मदाक्रान्ता

हा हा ! कैसे पथिके जनको रेलवे-कर्मचारी—
देते त्रास त्रम ! वह कथा ना कही जाय सारी ।
तौभी आया अनुभव मुझे सो कह अल्प आज,
तीजों दर्जा अति कठिन है रेलका जेलंगज ॥ ॥

५५

शिखरिणी

फटे टूटे माथा, कर पद नवे रेल चलके,
गिरे कूटे बैसे, अगणित मेरे हैं झुचलके ।
हुण हु री टट्टी निन पथिक पिप्पुत्र रक्के,
मेरे बैसे नीचे उतर कितने, “ट्रेन” हक्के ॥

५६

- १ तिसका शब्द भयकर है वह । २ मध्यकाल, आधीरात । ३ सुसाफिर, प्रवासी ।
४ तीसरा क्लास । ५ जेलोंका राजा अथवा जेलोंसेभी भयकर । ६ पास्ताना, पेशाव ।
७ गादीमें गेमी घन्नाथ बन्ध होता है ।

शिखरिणी

जगन्नाथ स्वामी दरश कर सन्ताप हरने,
मनीषा थी भारी अनुपम पुरी घाम करने ।
न रस्ता दृजा था, नहिं जलधिका शान्त पथ वा,
रहा, पीठा लौटा इट, निहैत था देव अथवा १ ॥

६३

वसततिरुका

श्रीतारकेश्वर महा शिखरे नितान्त,
वे पुण्य दर्शन हुए उम वक्त शान्त ।
है श्रेष्ठ भाग्य जिसके उसको सुयोग,
होता अपूर्व यह पावन-सत्ययोग ॥

६४

पाने निजेर्प्सित वहा कितनेहि लोक,
सोते समीप शिवके कर दु र शोक ।
होके प्रसन्न करुणांघन इष्ट देता,
है भाग्यहीन जन दर्शन जो न लेता ॥

६५

१ पूव दिशाका एक बड़ा घाम । २ समुद्र । ३ घुरा, दुर्देव । ४ यह स्थान बगालम प्रसिद्ध है । ५ पवित्र करनेवाला अच्छा प्रयोग अर्थात् निदर्शन । ६ मनचाहा, इष्ट । ७ दयाका मेघ अर्थात् कृपापूण ।

नित्यक्रम-वर्णन ।

मालिनी

अब हम सब भूले "रामके लाल" पास,
गहकर लिन खोते, साथ वा आसपास ।
फिरकर सन देखी राजधानी विशेष,
पर कबि न हुआ है चित्त सन्तान्तरेशेप ॥

मधुर मधुर जाते दी सुनाई अपार,
पर कबि न हुई थी शेष, पाया न सार ।
यदि हम फँस जाते देगके गुप्तराज्य,
कबि न चिन्तित होता मारवाडी-भ्रमभार ॥

कलकत्ता-वर्णन ।

पर्व इतिहास ।

शाद्वलविजयदित

सोलहसो सन बीच नीच पडि थी, थी अल्प वस्ती यहा,
सम्राट् अमर था सुशील, पर ये नव्यान् जुन्मी महा ।

१ स्वस्थ । २ बाकी । ३ सूमा भाव । ४ कलकत्तेकी नीच सन् १५९६ में पर्व
थी । ५ उस वक्त कुल १२००० आदिमियोंकी वस्ती था । ६ मुर्शिदाबादके नव्यान्

उपजाति

प्रसिद्धि पाया वह "ब्लैक-होल"
 नना वहा स्मारक चित्त खोल ।
 धृत्तान्त मारा लिख दुसरागे,
 सदा किया पथर खम भारी ॥

शिखारिणी

मराठोंका झंडा उस समय सर्वत्र भगवा—
 धना धगालेको, फिर कर गंडा था भय गवा ।
 वहा अंग्रेजोंने अधन करने ठीक अपना,
 रनाई थी रनाई, पर कर गई आज मपना । ॥

१ जहा थे लोग मेरे ह उसका नाम "Black Hole" अर्थात् काला छिद्र—ऐसा शौर्यशक्त रक्खा है । २ अब जनरल पोर्ट आफिमके निकट एक पत्थरका खम्भ खड़ा करके इसका स्मारक बनाया गया है । इसी जगह वह कालकोठड़ी थी । ३ सन् १७४५ से १७४९ तक बंगालमें रघूनाथ भोसलेके दीवान भास्कररावने सेनाधिपत्य कर बंगालमें बड़े जोरका आक्रमण किया था । ४ मराठोंके झंडेका रंग भगवा है जिसका कारण ६ पेजकी ६ टिप्पणमें दिया गया है । ५ कलकत्तेके नाज्दिक इनका सेनानिबन्ध हुआ था । ६ रक्षण । ७ सन् १७४२ में मराठोंके आक्रमणसे बचनके लिये अंग्रेजोंने कलकत्ते से चतुर् ओर तीन माल लकी राह बनाई थी ।

मदाक्रान्ता

धीरे धीरे चहु दिश फिरे, देशना भाग सारा,
देखा जाके, जन वैश किये गृध्र धधा पसाग ।
ठोटे मोटे कल्ह क्षगटे नित्य होते तथापि,
व्यापारी हो प्रचल बनके हो गये ये प्रतापी ॥

७५

शार्दूलविकीर्णित

स्लेन्डोका अति ताप था, न कहि था इन्साफ पूरा भला,
धे दुखी सन लोग, धर्म रविको था अस्त होता चला ।
वैसा था अनुकूल काल इनका, विश्वेश की थी दया,
क्या होती फिर देश राज्य बढ़ते ? विस्तार होता गया ॥

७६

विद्या, उद्यम, धैर्य, साहस, कला, वैसी मिला एकता,
लक्ष्मीको कर हस्तगों, प्रकट की सर्वत्र सत्ता मैता ।
पीछा ला हमको दिया त्रिपुलही "सार्यन्स"—विज्ञान—वा,
था सकेत यही दयाल विभुका होना इन्हींसे रजा ॥

७७

१ हाथमें लेना । २ मुसल्मानोंका । ३ धर्मरक्षा सूरजका । ४ लोप । ५ हाथमें ।
६ सर्व मान्य । ७ "Science"—विज्ञान । ८ योग्य, ठीक । आज जगत्तरमें जो इनका
उद्योग और साहस बढ़ा हुआ है उसका आदि कारण यही है इससे अनक अघटित बातें
बना अभेजानि सबको हँसते डरते हैं ।

वसन्ततिलका

उद्योग, धर्मरति, देश-निजाभिमान,
स्वातन्त्र्य, ऐक्य, ममता, उपकार, मान ।
विद्या, कला, विनय, नीति, समानभाव,
डालें अट्ट सब पै अपना प्रभान ॥

८१

शादूलविक्रिडित

ना भूलो, भटको, कहीं मत फिरो, सीखो इन्हींसे यही—
बाते, जा परदेशमें कर बड़ा उद्योग देखो मेही ।
ऐसा सुन्दर शान्त काल तुमको स्वातन्त्र्य पाके कभी—
आने हाथ न, राजभक्त बनके पूरो मनीषा सभी ॥

८२

श्रीकालीजीका स्थान ।

उपजाति

ऐसा न कोई स्थल है प्रसिद्ध,
यहा पुराना इतिहास-सिद्ध ।
तथापि है स्थान बड़ा विचित्र,
श्रीकालिकीका अतिही पवित्र ॥

८३

१ धर्मकी धृष्टा । २ देशका और अपना अभिमान, स्वात्मभाव । ३ यूरोप आदि ।
४ पृथ्वी । ५ स्थान । ६ इतिहाससे सिद्ध, प्रख्यात । ७ श्री काली माता—कलकत्तामें
प्रसिद्ध है ।

मालिनी

प्रथम जन हुए थे दर्शन क्षेमकरी,
तब प्रिय यही थी फेर हों पुण्यकारी ।
स्मरण कर बुलाया “रामके लाल” युक्त—
कर झट उनका वा मानस प्रेमयुक्त ॥

८७

महाप्राप्ता

आतेही मैं प्रथम झट ले “रामके लाल” साथ,
आया माई-दरश करने जोड़के खून हाथ ।
भागी भीड़ प्रतिदिन यहा प्रेक्षकोंकी प्रपूर् ।
तौभी माता बन रह सके पुत्रको देख दूर ? ॥

८८

प्रार्थना ।

शादलविकाशित

हे भग्ये ! करुणानिधे ! सकलकी माता तूही है ररी,
भक्तोंके अवनोर्थ तू अनतरी विज्ञानकी बैरररी ।
तू है शक्ति, सर्वैक सर्व तुझसे, तेरी त्रिधा शक्ति है,
ऐसी तू, फिर क्यों अशक्त हम है ? पूरी न वा भक्ति है ? ॥ ८९

१ कुशल करनेवाले । २ यो नना किया हुआ । ३ चित्त । ४ पूरी, सचाखच । ५ रक्षण करनेके लिये । ६ वाणा । ७ शक्तियुक्त । ८ कर्तुम्, अकर्तुम् और अन्यथा कर्तुम्-शक्ति ।

कैसा आत्मनलि प्रसिद्ध जगमे धर्मार्थ या ? देशकी-
रक्षामें ? तनुका त्वदर्थे बलि वा ? हत्या न थी मेपकी ।
थे रानों-कुल वान्छ वीर सज्जी प्ररयात, सन्ताप हा ।
लेते प्राण तवार्थ दीन पशुके, कैसा महा पाप हा । ॥ ९१

तूही है र्गति सर्वकाल जगकी, सर्वत्र तू है भरी,
तू मौरी बनती, अकाल काहें वा तू प्लेग हो ऊभरी ।
होता आत्मनलि-प्रधान अन ना-तू जान ऐसा कहीं,
लेती है स्वयमेव आत्मनलि वा ? जाने नहीं एकही । ॥ ९२

हे वैज्ञानिक काल आज, नहीं है वैसी महा यौमिनी,
जो देके बलिको निराश्रित करे पुत्रादि वा कामिनी ।
तू लक्ष्मी सनकी प्रधान मति है, विद्या महा मर्गला,
होके तू अवतीर्ण रक्ष हमको वौणी रमों सगें ला ॥ ९३

१ आत्मसमर्पण, आत्मत्याग । २ अपने धर्मके लिये । ३ त्वन्-अर्थ=तेरे कारण ।
४ भेद । ५ चित्तौरके महाराना लक्ष्मणसिंहने अपना और अपने पुत्राका बलिदान किया
था । महाराना प्रतापसिंहने उमर भर युद्ध करके अपने राना कुलकी पवित्रता कायम
रक्खा था । पद्मिनी और कृष्णाकुमारीका आत्म बलिदान किसीसे छिपा नहीं है । वैसेह
अपने पातित्रयके रक्षणार्थ हजारों लिया चित्तौर गढमें जल मरों-यह बातभी किसीसे
छिपा नहीं है । ६ वा-अन्य=अथवा दूसरे । ७ तव-अर्थ=तेरे कारण । ८ मत्ता उपाय ।
९ महामारी, मारनेवाली । १० अपनी आत्माका बलिदान । ११ अंधेरी रात, अधाधुधका
समय । १२ कल्याण करनेवाली । १३ सरस्वती, विद्या । १४ लक्ष्मी, धन, वैभव ।
१५ अपने साथ ।

उपजाति

वहा मिली थी लघु, एक कोठड़ी,
रहें उसीमे सह यत्रेणा बड़ी ।
आती सग याद समीप हो रखी,
अमेजहत्री यह कैल-कोठड़ी ॥

९९

वस-ततिष्ठका

जो "गम प्रेस" गृहसस्यिते गर्भ लीने,
हो आज विस्तृत जरा प्रतिग्रन्थ हीने ।
पापी कराल वध-कारक "ब्लक होल"
मानो हुआ फिर वही अवतीर्ण गोल । ॥

१००

यत्रेश शुद्ध मरुदेशज रामलाल,
है श्रीनिवास जन एक बहा दलाल ।
है गीधके निकट काक जहा प्रधान,
होता पवित्र, अपवित्र बहा विधान । ॥

१०१

१ वेदना, दुःख, पीडा । २ अप्रपञ्चको मारनेवाली । ३ "ब्लकहोल" । ४ घरमें ।
५ वीचमें । ६ लवा, पैला हुआ । ७ रोकटोक विनाका । ८ छापस्तानके मालिक ।
९ सीधेसादे । १० पक मारबादा । ११ यह एक ललित्या उपनाम के अप्रवाल महाजन
हैं । रामलालजी इन्हींकी सलाहसे चलते थे । यद्यपि वे पत्रे मारवादी हैं तौ भी इनके
आगे उनका कुछ नहीं चलता था ।

स्त्रियोंकी दुर्दशा ।

शार्दूलविकीर्णित

वैसा है निकट प्रसिद्ध मनुवा बाजार गुल्जार बा,
सायकाल जहा सुदृश्य बनता कैमीजनोको रैवा ॥
हाहा ! देव ! विचित्र शक्ति तब है, कैसी स्त्रिया ला धरी,
ना दीखा जिनका कहीं नरन उन्हें वेश्या बनाके रखी ॥ १०८

मन्दाक्रांता

हिन्दू स्त्रीकी सकल जगमें कीर्ति कैसी सिली है ?
भर्तृप्राणा विरहभयसे जो सती हो जली है ॥ ।
वेही प्यारा स्वपति तजके, कामेलीला विचित्र,
हा धिक् ! कैसी अन कर रही ? हो गया काल चित्र ॥ १०९

शार्दूलविकीर्णित

वे दोपी नहि है, न दोष उनका, दोपी हमी लोक हैं,
वेजोडाँ करते विवाह, उनको हा ! बेचते शोक है ॥

१ स्त्रियोंकी इच्छा रखने वालोंको, व्यभिचारियोंको । २ योग्य, ठीक । ३ पति है प्राण जिनका अर्थात् प्राणसे भी पतिको प्यारा माननेवाली । ४ कामदेवकी प्रीति= व्यभिचार । ५ समय । ६ अजब । ७ छोटी कन्याके साथ बूढ़ेका और बड़ी कन्याके साथ छोटे वरका, अनमेल । ८ कन्याविक्रय ।

कुसगसे भ्रष्ट बने विचारी,
अज्ञान ये तो अगलौ विचारी ।
समीप जो हो, लिपटे लताँ सी,
स्वधर्म खोती वन पापराँसी ॥

११४

वसन्ततिलका

खोते नहीं हम कभी व्रत एरुपँत्नी,
होते बुरी न करने इनको प्रयत्नी ।
प्रेमप्रभाव रखते समभान वैसा,
बाजार आज इनका लगता न ऐसा । ॥

११५

दासी, गुलाम, बर्तकी नहि है हमारी,
अर्धोगिनी नर-खोनि प्रिय मित्र नारी ।
पूजाई नित्य कहते स्मृति-शार्ङ्गकार,
माना न हा । तन हुआ उलटा प्रकार ॥

११६

१ विचारवान, ज्ञाना । २ बलहीन, विचारहीन । ३ बेलके समान । ४ पापकी भागिनी । ५ अपनी विवाहिता स्त्रीके सिवा अन्य स्त्रीको माता समान समझना ऐसा । ६ प्रयत्नवान, उपाय करनेवाले । ७ प्रेमका प्रताप । ८ लींड़ी । ९ स्त्री पुरुषका आधा अंग माना गया है इस लिये उसे “अर्धोगिनी” कहते हैं । १० नरकी खान—“नारी निन्दा मत करो, नारी नरकी खान ॥ जिस नारीसे ऊँज, ध्रुव प्रल्हाद समान ” । ११ पूजा—अर्द्ध=पूजाके—सत्कारके योग्य, “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता । यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सवास्तत्राप्फल्य क्रिया ॥” जहाँ स्त्रियोंका सत्कार होता है वहाँ देवता रममाण होते हैं । जहाँ इनका सत्कार नहीं होता वहाँ सब क्रिया निष्फल होती हैं—इत्यादि स्मृतिकारोंने बहुत लिखा है । १२ स्मृति और शास्त्रको बनानेवाले ।

होता चला प्रतिदिन क्षय शुद्ध वीज,
हा ! देश है इस लिये कुल्मी न चीज । ।
जाता रहा स्वकुल-देश-निजाभिमान,
हा ! हन्त ! धर्म न रहा, धन, धान्य, मान ॥

११७

दक्षिणोत्तर भाग ।

संग्रह

देखे वाजारा सारे, फिरकर सगरे भाग नेनों निहारे,
गोरो है दर्शनीय, प्रतिकृति नव है, मार्ग है स्वच्छ सारे ।
काला है उत्तरीय प्रति पथ गृह वा कौलका कौलराज ।
गोरा काला समान क्षण न धन सके पूर्ण सिद्धान्त आज ॥ ११८

दक्षिण भाग ।

शाल्विक्रीडित

भागी दक्षिण भागमें खलली अग्रेज वाजाराकी,
चाहा माल कमाए, एक दर, ना सीमा खरीदोंरकी ।

१ निखालस, ये मिला हुना । २ अपने कुल्का, देशका और अपना अभिमान ।
सपेद, शुभ्र, यरा बहुधा अग्रेज लोग रहते हैं । ४ दक्षिण भाग । ५ चित्र,
ये, प्रतिमा । ६ उत्तर भाग । ७ काला, यम, समय । ८ कालका राजा अर्पण
मैला, खराब । ९ बहुत बटिया । १० माल खरीदने वालोंकी ।

होती है मति मुग्ध देख रचना प्रत्येक ही भोगी,
आती याद विचित्र लुप्त अपने साम्राज्यके भागी ।। १२२

मदाकाता

क्या क्या देखें ? अगणित यहा रम्य चीजें हमारी,
देसी खासी कल कुशलता स्मारकप्राप्त सारी ।
होता भारी स्फुरण करने वस्तुसम्राट् देश,
था भी वैसा, पर अब नहीं जित्पनिद्या-प्रवेश ।। १२३

संग्रहा

वागीचा श्वर्पदोका विविध तरुलता-पूर्ण सौन्दर्यरासी,
भोलसिंहादि बन्ये प्रनल पशु जहा वेशदेशान्तेवासी ।
नाना पक्षी मृगादि, स्थलजलचर है सर्पभी उग्र भारी,
अत्यन्त प्रेम्णीयाकृति पथ जिसके दृश्य आश्चर्यकारी ।। १२४

१ मोहित, स्तब्ध । २ वस्तुसम्राट्के स्थानके भाग । ३ लोपा हुआ, नामशेष । ४ सार्व
भौम राज्य । ५ दब, नसीब । ६ यत्र । ७ क्षरीगिरी । ८ यादगार, स्मरणकरने योग्य ।
९ जोश । १० पदार्थोंका समग्र निसर्ग होना योग्य ऐसा । ११ ३३, कुशलता, क्षरी
गरी इत्यादि विद्याप्र प्रवेश । १२ हिंसक पशु । १३ पाउ बेलसे भरा हुआ । १४ रीछ,
सिंह आदि । १५ बनमें रहने वाले । १६ देश देशान्तरके । १७ पृथ्वी और जलमें रहन
वाले । १८ एक विभागमें नाना प्रकारके सप रखे हुए हैं । १९ देखनेके योग्य हैं रच
ना जिसकी । २० मार्ग । २१ देखाव, निःसंशय यह अलापुरका बगीचा देखने योग्य है ।

होती वैक कभी, न काम करती, वा स्पर्शसे मारती,
तेजस्वी व्यसनोत्त हो न उसकी जाती छिपाई मँती ॥

१२७

शिखरिणी

अहा ! गगाधारा नगर निच कैसी बह रही ?
बडी ठोटी लेके तरणि-सँलिया साथ सनही ।
चली मानोवेशा जलैधिनिक्ट डेश-हरणी,
अकेली ना सोहे पति विन कभी दूर रमणी ॥

१२८

भुजगप्रयात

धधे हैं किनारे कहीं खून घाट,
लगा प्रेम्हकोंका जहा ठाटवाट ।
हजारों करें स्नान आके प्रभात,
करें देवपूजा सभी भात भात ॥

१२९

भालिनी

हर हर ! पर देखा खिजनोंका नहाना—
पुरुपनिर्करके हो धीच, लज्जा बहाना ।

१ टेटी । २ छूनेसे । ३ व्यसन-आर्त=सकटसे दु ली । ४ तेज, प्रभाव । ५ जहाज,
आगबोट मानो जिसकी सखिया हैं उनको । ६ मानने आवेशसे अथर्व वेगसे । ७ समुद्रके
नजदीक । ८ पुरुषका समुदाय, आदमियोंकी भीड़ ।

कैसा दृश्य मनोहर प्रकृतिका तीरस्थै लया बना ?
मानो पार्कि रची सुदृष्टिपैथके सोपानकी शोभना ॥

१३

मालिनी

पुल नहिं हबडेका, धाहु मानो धराने,
अति ललिते पसारा, मेल पूरा कराने ।
उभय तटनिवासी त्रास कोई न पावें,
हिलमिल अपनी वे नित्य मैत्री बढावें ॥

१३

पृथ्वी

अनन्तपथ सुन्दर प्रभुपदान्ज मानो यहा,
धरा सकल नापके त्रिपथगोगत क्लेशहो ।
हुआ पुल वही, सिंचा प्रकृति अस्से वा पादका,
तभी चरणजों वही पदतैले पवित्रोदका ॥

१३

१ स्वाभाविक काटीगरी, निसगरचना । २ तीरपरक । ३ कतार । ४ अच्छी दृष्टि
पाग । ५ जीना, सीढ़ी । ६ मुदर । ७ जिसका अन्त नहीं बढ आकाश उसका माग
८ ईश्वरका पदकमल, यह वामनावतारके पदका घणन है, जिमने बहुत घनके बलिसे त्रिपा
भूमि मांगी थी पर दोही पादमें सब भूमिक आश्रमण करके तीसरा पाद बलिके सिरपर
धरके उसको रसातल पहुचाया । ९ पृथ्वी । १० भागीरथीमें । ११ हु ए दूर करनेवाला
१२ स्वाभाविक रचना । १३ फोटो । १४ गंगा, भगवान् विष्णुके चरणसे निम्ली है ।
१५ पेरक नाँव । १६ उद्भूत है जल जिससे ।

शादूलविक्रीडित

झाड़ ना फिरता वरानग जहा, रस्ते कहीं साफ ना,
होती है धरसात, कीच उड़के पोपाक होती फेना ।
पानी ना यहता, वही सड़कमें होता इक्ठ्ठा सदा,
रस्ता हो जलपूर्ण "ट्राम" रुकती । कैसी गति त्रासेवा ? ॥ १३९

मालिनी

पदपैथ नहीं पूरे, धूम है गाड़ियोंकी,
अति कठिन दशा है पादचोरी जनोकी ।
अलग अलग कोई है न बाजार एक,
कहिं कुछ कहिं कैसा । मिश्र है एकमेरु ॥ १४०

सम्भरा

वे राजाँ मागवाडी यहि पर रहते, फाटका वा दलाली,
अप्रेजोंकी सदाही कर बहु धनमान् जो हुए भार्यशाली ।

१ खराब । २ पानीसे भरा हुआ । ३ त्रास देनेवाली । ४ पगरस्ते "FOOTPATH"
५ पाव चलनेवाले । ६ मिले हुए । ७ सन १९०४ जनवरीमें मारवाडी एसोसिएशनका
वार्षिकोत्सव हुआ था, उस वक्त अपनी वक्तृतामें बाबू दुल्हीचन्दने "बलस्तेके मारवाणी
राजा हैं" ऐसा कहा था—उसीका यहा अनुलङ्घ्य है । ८ भाग्यवा ।

मातिनी

उपनेयन-कया वा श्रद्धाचर्यादि भूल,
 पर यह गिनु-वृद्धोद्वाह की स्त्र भूले ।
 निज पृषिपशु-रक्षा धर्म वाणिज्य छोडा,
 स्वकुलपथ निसार, भ्रान्त हो पाप जोडा । ॥

१४४

शिरारिणी

“इय गेहे लक्ष्मी” कविचचन ये भूल, अय हा ।
 स्त्रिया की है दासी विगतभय, लज्जा सन बहा ।
 सिखाई ना जिया, गृह उचित वा शिक्षण दिया,
 पतिप्रीतिश्रद्धो रहि न कुल भी सँभर किया । ॥

१४५

१ जनेऊ, मौजीब-धन । २ बीस वर्षतक पूरा ब्रह्मचर्य रखकर विद्याभ्यास पूर्ण होनक
 अनंतर विवाह करना इत्यादि । ३ बाल और वृद्ध विवाह । ४ गफलतें । ५ “कृषिगो-
 रक्ष्यवाणिज्य वैश्यकर्म स्वभावजम्” अर्थात् खेती, गौका पालन और व्यापार ये वैश्योंके
 स्वाभाविक कर्म हैं-वे खेती और गोपालन । ६ व्यापार । ७ पूर्वजोंका भाग, अपने
 कुलका रस्ता । ८ भ्रान्तिगत हो । ९ “यह घरमें लक्ष्मी है” भवभूतिने उत्तररामच-
 रितमें यह पद्य लिखा है-“इय गेहे लक्ष्मीरियममृतचर्तितनयनयोरसावस्था स्पर्शो वपुषि
 बहुलधनन्दनरस ॥ अय कण्ठे बाहु शिशिरमण्डणो मौक्तिकसर किमस्या न प्रेयो यदि
 पुनरसद्यो न विरह ” । १० जिनका भय जाता रहा है ऐसी । ११ पतिमें प्रेम और
 श्रद्धा । १२ मिश्रिकरण, वर्णभ्रष्टता, गौतम कहते हैं-“स्त्रीषु दुष्टासु बाण्य जायते
 वर्णसकर । सकरो नरकयैव कुलभाना कुलस्यच ॥” अर्थात् स्त्रीजाति बिगड जाने
 सेही वर्णसकर होता है ।

इन्द्रवज्रा

गाती फिरे गीत गली गली हा ।
अश्लील बाणी मुखसे चली हा ।
बेटी बहू जान न मार्ग जाती,
होते खुशी छेड उसे स्वजाति । ॥

१४६

वसन्ततिलका

जो गा सके न कुलटौ अपमान्द नीच—
गाती पिता स्वजन बन्धु समाज बीच ।
होते प्रसन्न सुनके, उलटे मजाक—
हा हा ! कौं सय, कहा फिर लाज धाक ? ॥

१४७

शार्दूलविक्रित

देखे हैं सब “हाय हाय” करते श्रीमान्दरिद्री तथा,
“पैसा हाय बना” स्वधर्म कुल्हे उद्धारकी ना कथा ।
बिना, वेशसुधार याद इनको आवे कहासे भला ?
सारा विश्व जहा “स्वधर्म” जिनको महुँकसा एक्ला । ॥

१४८

१ मारवाडी । २ देश्या, व्यभिचारिणी । ३ अपना घर ४ मेहक जैसा—“रूपमइक-
याय ” अर्थात् मडकके अपना चुनाही सारा जगत् होता है ।

हरिणी

हर हर ! तभी होना है “शायलक” समान ही,
निद्रित इनका भागी, न्यौपार डूँढ छिपा नहीं ।
निज पर न जाने चा, पैसे बिना पहिचान ही,
मनुज धनके चास्ते, क्या क्या अहा ! करता नहीं ? ॥ १४९

वसन्ततिष्ठका

एवर्षे हजार लगता जन एक पैसा,
वैसे हजार लगते तन दे न पैसा । ।
छोडे न बन्धु सुतको कभि एक पैसा,
देते पर प्रणैलको प्रिय सर्व पैसा ॥ १५०

इन्द्रवज्रा

है ऊट सर्वोहक शीघ्रें गामी,
है वाजरा अन्न कठोर नामी ।
है चर्म-पानी मँरु टेण वैसा,
होता सदा अकुर वीज जैसा ॥ १५१

१ यह एक यहूदी इतना दुष्ट व्याजखोरा था कि जिसने रुपयेके बदलेमें एथेनियोंके शरीरका मास काट लेनेमें बेहद निदयता दिखाई था । २ कपट । ३ जबरदस्त । ४ ले जाने-वाला वाहन । ५ जल्द चलनेवाला । ६ चमड़ेका पानी ७ । मारवाड, निजलप्रदेश

शार्दूलविक्रीडित

देके नाम “असोसिएशन” सभा, “कामर्स” की “चेम्बर”,
खोली वैश्यसभा यहा, बहु हुण उत्साहसे मेम्बर ।
वैसी शुद्ध—पदार्थ—प्रक्रियकरी दूकान एकाध वा,
गोशाला, विधवासहोयक खुली फड़प्रथा भी नैवा ॥ १९२

वसन्ततिलका

विद्यालैय प्रवर खोल किया घनेरा—
विद्या-प्रचार, तन भी न मिटा अधेरा ।
चन्दा किया प्रबल साहससे इकठ्ठा,
तौभी परस्पर मिटी न समाजठठा । ॥ १९३

शार्दूलविक्रीडित

क्या होता ? जब ले सुधार घरका होने न आदर्श हो,
क्या भारी पड़ता प्रभाव किस पै सम्पूर्ण सहेर्श हो ।
विद्यासन्मतिहीनको न मिलते सत्कीर्ति सन्मान ही,
जन्मा है वहि जो “कुलोन्नैत करे” वैसा न—जन्मा नहीं ॥ १९४

१ मारवाडी एसोसिएशन । २ “चम्बर आफ कामर्स” । ३ शुद्ध पदार्थ बेचनेवाली ।
४ पीजरापोल, गायें पालनेकी जगह । ५ विधवाओंकी सहायता करनेवाली । ६ नई,
अच्छी । ७ मारवाडियोंका विशुद्धानन्दविद्यालय । ८ विद्या पढ़ाना । ९ दण्डस्वरूप, प्रति
विम्बरूप, स मार्गमागी । १० उत्तम देखनेवाला । ११ कुलको ऊंचा करना—श्रेष्ठ करना ।

होली का जलसा विचित्र इनका देखा यहा, देव हा ।
 होता है फिरना अगम्य पथमें, लज्जादि देते वहा । ।
 मिट्टी धूल उडा विनोद करते अशील वार्त सुना,
 बँके पाग, करे खराब कपड़े-सन्मार्ग कैसा चुनो ? ॥ १५५

वसन्ततिलका

माता पिता बाहिन बान्धव को न माने,
 रस्ते चली युनैतिको फिर कौन जाने ? ।
 टटा फिसाद करते पैरको भि छेड ।
 हाहा ! अदालत करे इनकी निवेड । ॥ १५६

भुजगप्रयात

जहा रोशनीमा नया ठाट्वाट,
 बहा मारवाडी गये भूल बाट । ।
 मिली सभ्यता ना, न की देश-सेवा,
 न्हिये दो धँडे या, लडे बन्धुसे वा । ॥ १५७

दियाया कभी ना कहीं प्रेमभाव,
 नहीं मित्रता भेल, रूखा स्वभाव ।
 न की बात प्यारी, न सची किसीसे,
 रिझाया न जी साथियोंका खुशीसे ॥ १५८

१ स्वीकार करना । २ बी॥ ३ दूसरी जातके लोगसे भी । ४ मुपारा । ५ जातके दो दल ।

इन्द्रवज्रा

“ऐड्डेसै” लेके तुमको कहा था—

क्या लाटने ? गोरैव क्या रहा था ? ।

भूले न होंगे ? घरका सुधार,

क्या क्या किया ले किससे उधार । ॥

१९९

सुग्धरा

राजा होता वही जो सन जन अपने हाथमें ले चलाता,

माने आज्ञा जिसीकी सब, सन जनको नीतिगौमी बनाता ।

आज्ञा माने न कोई, घर तरु जिनका अल्पही शब्द जाके,

कैसे राजा बने है ? हर हर ! जन ये मारवाड़ी प्रजाके । ॥ १६०

शार्दूलविश्रीजित

सत्ता है प्रभुकी अगोध, उसकी जाने न कोई कर्ला,

क्या था देश महा बली ? अन वही कैसा हुआ बेकला ।

चारो वर्ण समान-भाव, अतुला थी धर्म-श्रद्धा तथा—

स्वार्थत्याग, परोपकार जिनका वैसा सुनिश्चयात था ? ॥ १६१

१ मानपत्र—बगलके श्रीमान् छटे लाटके मारवाड़ी एसोसिएशनका तरफसे दिया गया था । २ सम्मान । ३ नीतिसे चलनेवाले । ४ छोटसामी । ५ गहरी, दुर्लभ । ६ विभूति, सामर्थ्य । ७ अपने अर्थस्य त्याग । ८ बहुत प्रख्यात, बड़ा मशहूर ।

भुजगप्रयात

करेगा वही ईश होके प्रसन्न,
फभी ना फभी देशको सोपपन्न ।
अभी ज्ञान होता चला एकताका,
चदेगी वभी धर्मकी भी पताका ॥

१६१

वगाली साहित्य ।

रूपधरा

जाना मगालियोंका कुछ कुछ लिखना, भाषणादि प्रकार,
वैसे ग्रन्थादि देखे, कुछ कुछ उनका ज्ञान साहित्य-सार ।
बिना भाषा उन्हींकी सरस बहुतही, श्रेष्ठ देशभिमान—
पूरा पूरा भरा है, विनय नय सदा प्रेम-भावप्रधान ॥ १६२

पृथ्वा

नवीन पथ धर्मका रच सम्राज सोसाइटी,
मुधार अपना किया स्वकुल्की अविद्या हटी ।
कमाल निज काजमें बहुत की मुधोसार ही,
प्रग्रन्थ कविता रची, युवतिमूढता ना रही ॥

१६४

१ कलादिकोसे युक्त । २ काव्यादि साहित्यका सार । ३ प्रेमका भाव है मुख्य जिसमें । ४ ब्रह्मी समाज । ५ सभा, परिषत् । ६ अज्ञान, अधेरा । ७ अमृतका सार । ८ स्त्रियोंकी मूढता ।

मन्दाश्रिता

वैसी भाषा सरल मधुरा आज हिन्दी हमारी,
सद्बोधो है प्रकृतविषया पूर्ण देशोपकारी ।
भाषा ही है सकल जगमें सर्वदा सन्निधान,
होती ना तो कब न सक्ते भावना हृदिर्धन ॥

१३८

इन्द्रलज्जा

भापैक्यें होता निज राष्ट्रकारी,
यूरोप दृष्टान्त मत्तैक-धारी ।
भापैम्यकी है लिपि एक नीब,
होता इन्हींसे सुवृत्तार्थ जीव ॥

222

वसुन्ततिलका

कर्तव्य है परम आज यही हमारा,
भाषैकतार्थ करना लिपिका मुधारा ।
भाषा प्रधान, सन एक लिपिस्थ होना,
होगा यहाँ सकल-भिन्न-विचार-खोना ॥

१७०

१ अच्छा बोध देनेवाली अर्थात् शीघ्र समयमें जानेवाली । २ अधिष्ठित विषय-जिसमें हर कोई विषय ठीक दिखा जाता है वह । ३ चित्तकी भावना-स्थालात । ४ हृदयके उद्गार । ५ भाषाका एकता । ६ राज्य करनेवाला । ७ एकमत धारण करनेवाला । ८ एक भाषा होनेके लिये । ९ वर्णमालामें ।

सम्पादक-प्रवरका यह मुख्य काम,
जो है समर्थ करने परिपूर्ण काम ।
हा रोद ! देख उनका वह बुद्धि-फेर,
आशा वृथा, समयका यह हेरफेर ॥

१७१

वैश्योपकारक ।

वसुततिलका

जो अप्रबाल उपकारक जाति-पत्र,
था एक ही कुपथ तौपहरातपत्र ।
जिस्को स्वजाति अजमेर सभा चलाती—
थी जो सुमार्ग चलना सजको सिरपाती ॥

१७२

शादूलविश्रुति

हो ली थी जन " गम प्रेस " गृहकी थोड़ी व्यवस्थाने नवा,
लेके पत्र यहा प्रसिद्ध करना—ऐसा हुआ ध्यान वा ।
वैश्योंका उपकारक प्रिय किया, चित्रादिकोंसे सजा,
मैं सम्पादक, गमलाल उसके स्वामी बने बेजजा ॥

१७३

१ अच्छे संपादकोंका । २ इच्छा, आशा । ३ इस नामका एक पत्र ।
४ मारवाड़ियोंका । ५ कुरातिका ताप निवारण करनेवाला छत्र । ६ अप्रबाल सभा ।
७ तजवाज, तरदद । ८ अप्रबाल—उपकारक । ९ वैश्योपकारक ।

भुजंगप्रयात

चला तीन ही मास सोत्माह भारी,
हटे "गमने लाल" हो येनरारी ।
उसीसे हुआ छोड़ देना, अगाही—
किसीके हुए हैं कभी मारवाही ? ॥

१७४

वसन्ततिलक

थे मित्र वैश्य-गुरु "माधवने प्रमाद"
सम्पादक प्रिय "सुदर्शन" माधु-वादे ।
दे हाथ पत्र इनके-ठहरा चलाना,
तौभी यथासमय ठीक कभी चला ना ॥

१७५

हिन्दी साहित्यसभा ।

साहित्यकी कर यहा कुछ भी न चचा,
पर्चा निकाल किसने काभे की न अर्चा ।
हिन्दी धनी अशरैणा, कविता अज्ञान,
उद्धार पूर्ण इनका किसने किया न ॥

१७६

१ मारवाडियोंक गुरु । २ भिवानीनिवासी श्री माधवप्रसाद मिश्र । ३ जिनका भाषण वा कीर्ति अच्छी है वे । ४ सेवा । ५ आययद्दान, निराधार ।

मालिनी

पर इधर बनी थी भावना मिश्रजीकी,
अतिशय शुभ चर्चा हिन्दि साहित्यकी की ।
सब सुजन बुलाके स्थापना की सभाकी,
झट नियम बनाके यत्नकी पूर्णता की ॥

१७७

भुजगप्रयात

सभाध्यक्ष लाला हुए फूलचन्द,
हुए कार्यकारी, बने सभ्य चन्द ।
बिनेता हुए रुडमैल प्रयुक्त,
व्यवस्थाधिकारी हुआ मैं नियुक्त ॥

१७८

प्रयाण ।

मालिनी

अन अधिक नहीं था अन्नपानी यहाका,
स्थिर हृदय नहीं था, काल था खूब थाका ।
झट घर चलनेकी सिद्धता पूर्ण हो ली,
सहैठ्य सुजनोंके प्रेमकी गाठ खोली ॥

१७९

- १ माधवप्रसाद मिश्र । २ हिन्दी साहित्यसभा । ३ “प्रेसिडेन्ट” सभापति ।
४ लाला फूलचन्द हलवासिया । ५ सभासद, मेम्बर । ६ चलानेवाले, अग्रसर ।
७ बाबू रुडमैल गोएनका । ८ सम्पादक, सिक्रेटर । ९ तैयारी । १० अच्छे दिलवाले ।

शार्दूलविकीर्तित

आये स्टेशन पै मिलाप करने सन्मित्र मेरे सभी,
चुन्नीलाल हकीम, टीवरै तथा वे "रामके लाल" भी ।
पीछे घालसुकुन्द गुप्त पहुँचे, सारे मिले नेहसे,
गाड़ी "मेल" चली, चला नयनसे प्रेमाश्रुको मेहँसे ॥ १८०

मार्गस्थ स्थानवर्णन ।

वसन्तातल्लका

देखा हुआ प्रथम था पुर वर्धमान—
आया, जहा बहु शिवालैय शोभमान ।
प्रासाद घाग नृपके रमणीय भारी,
राजा मुशिक्षित यहा जनतापहारी ॥ १८१

मन्दाकान्ता

रौनगिज, प्रथम यहि थी रेलैसीमा, अगाडी—
ऊटो पैसे उतर हनडे जा बसे मारवाडी ।

१ पठित चुन्नीलाल शर्मा हकीम । २ बाबू राधाकृष्ण टीवडेवाला । ३ भारतमित्र सम्पादक । ४ आनन्दके भ्रातृ । ५ मेह जसे, बरसात समान । ६ बरदान । ७ यहा १०८ शिवालय बहुत सुन्दर बने हुए हैं । ८ प्रजापद दुःख हरण करनेवाला । ९ सन १८५७ में रेल यहाँ तक थी । १० रेलघड़ी हट ।

भुजगप्रयात

गयाजी यहाँसे पुरा मैं गया था,
क्रियाकर्म मैंने जहा हा । किया था ।
गवा तीन रत्न श्री था जनों में,
फिरा था वहीं “शोकके काननों” मे ॥

१८९

मालिनी

छलकर बहु पडे यात्रियोंको सताते,
प्रभुदत्त धन पूरा आद्व भी ना कराते ।
“पितर सरग तेरे हो गये” बोल ऐसा,
कर पर धर माली छीनते खून पैसा । ॥

१८६

इन्द्रवज्रा

क्या ये न जानें—अपना भि ऐसा
हो आद्व होगा न बनाव बैसा ? ।
हा । त्रास देते फिर क्यों सताके ?
क्या काल टेढा इनको न ताके । ॥

१८७

१ श्री, पुन और क्या ये तीन रत्न । २ “शोककानन” नामक एक पुस्तक
३ आनन्दित, सतुष्ट । ४ फूलोंकी माला—यात्रियोंसे मनमानी दक्षिणा लेनेके लिय
आद्वकिया समाप्त होनेपर गयावाल एक फूलकी माला उनके हाथोंमें डाल देता
है और मनमानी दक्षिणा मिलनेपर उनको मुक्त करता है ।

पृथ्वी

समीप इसके भली श्रमहरा गया बुद्धकी,
यही तप किया कड़ा निज तनु स्वयं शुद्ध की ।
स्वधर्म उपदेशक प्रबल था सदा गौतम,
प्रसार जिसने किया स्वर्मेतका, हरा हृत्तम ॥

१८८

बसन्ततिलका

जापान, चीन, वह तिब्बत वा सिलोन,
है बौद्ध धर्म इनका, पर है बलोन ।
जापान भाज विजयी जगदार्मान,
है मुख्य बीज निज धर्म-कुलाभिमान ॥

१८९

होता स्वधर्म सनको अति लाभकारी,
वैसा भयावह सदा परधर्म भारी ।
सिद्धान्त भूल यह भाग्यके निवासी,
रों एकता बन गुलाम हुए प्रवासी ॥

१९०

१ ग्रास हरण करनेवाली । २ शुद्धगया—यह बौद्ध धर्म स्थापक ईसाइ सनके
६ सौ वर्ष पहिले विद्यमान था । यह राजपुत्र था । इसके पिताका नाम शुद्धोदन
और माताका नाम मायादेवी था । ३ यह बुद्धका नाम था । ४ बौद्धधर्म । ५ हृदयका
अधकार, अज्ञान । ६ बल-ऊन=बलसे कम, कमताकत । ७ जगत्-आप्त-मान=घारे
ससारसे जिसको मान मिला है वह ।

शार्दूलविकीर्णित

रस्तेमें सह ताप खूब पहुँचा काशी पुरी धामको,
लीने दर्शन त्रिधनाय शिखरे देखा परधामको ।
दुर्दारोज, गणेश, भैरव तथा दुर्गात्रिपूर्णा शिवा,
अस्तीघाट, पिर्जाचमोचन, सभी छोड़े न देरे सिवा ॥ १९१

उपजाति

देखी पुरी थी यह एक धार,
तौभी लगी सुन्दर धार धार ।
जहा तहा नित्य नई मुहूर्ति,
वही सरी सुन्दरता कहावे ॥ १९२

भुजगप्रवात

किया जाह्नवी-स्नान पापापहारी,
बहासे सभी घाट-शोभा निहारी ।
बने हैं यहा ये पय पात्र-सीमा,
वहे नीर गम्भीर हो खूब धीमा ॥ १९३

१ श्रेष्ठ स्थान, मुक्तिधाम । २ यह एक गणेशजीका स्थान है । ३ कालभैरवका स्थान ।
४ दुर्गादेवी और अन्नपूर्णा । ५ यहा अस्ती नदियोंका संगम है । ६ यह एक तीर्थ है ।
७ सुन्दर देखते । ८ गंगास्नान । ९ पानीके पात्रकी हद्द ।

भुजगप्रयात

हरिश्चन्द्रका सत्त्व देखा गया था—
यहीं, केवटें ले घनोंने दिया था ।
स्वय जीव प्यारा, मरे मुक्ति पाने ।
अहा ! कालकी वक्रता कौन जाने ? ॥

१९६

वसन्ततिलक

बौद्धाधिकार रहके नव “सारनाथ”
खाली बना, पर किया सबको अनाथ ।
इस्लामधर्म-धरने बहु मन्दिरोंको—
तोड़ स्वय रचि वहीं निज मस्जिदोंको ॥

१९७

शार्दूलविक्रीडित

भूलेंगे न कराल काल । अतिही उन्माद तेरा कभी,
कूदे शकर कूपमें ठिप रहे, भागे पुजारी सभा । ।
कैसा नाग किया प्रमत्त धनके इस्लामियोंने यहा,
धर्मग्रन्थ जला, स्वधर्म सजका छीना बलौत् हाय हा । ॥

१९८

१ यहा एक कूप है वहा करवट लेके मुक्तिपानेके लिये भद्रावान् लोग आत्मघात करते थे । २ एक पुरातन बौद्धका स्थान । ३ घुस्रमानोंन । ४ शान-वार्फामें । ५ बलात्कारसे, जघन ।

उपजाति

मिला यहाके सय सज्जनोंसे,
इच्छा हुई पूर्ण घने तिनोसे ।
देखा नया मन्दिर नागरीका—
प्रचारकर्त्री सुर-सागरी का ॥

१९९

वसततिलक

सारे सभासद जभी प्रयत्नैक-भाज,
होंगे तभी सफल पूर्ण महानुभाव ।
अच्छा अभी समय है, नव नागरीका—
होने प्रचार बहुधा गुण-आगरीका ॥

२००

उपजाति

हुआ रवाना अज मैं यहासें,
जहा तहा देर सुदृश्य रासे ।
श्री विन्ध्यदेवी निकट प्रसिद्ध,
की फेर याद प्रतिमा सुसिद्ध ॥

२०१

१ नागरी प्रचारिण सभाका । २ सुखके समुद्रका । ३ यत्नपूर्वक एक भाव धाते ।
४ सिद्धमनोरथ । ५ सज्जन । ६ अच्छे दिखाव । ७ मिर्जापुरके समीप श्रीविन्ध्यवासिना
देवीका स्थान है वह । ८ मूर्ति, स्तम्बी ।

वसततिलका

आया यहा निगलने फिर तीर्थराज,
युक्तप्रदेश-नगरी रमणीय आज ।
कॉलेज, हॉल, कटरों, पथ जार्नसेन,
घाजार, चौक-सुथरे सगते किसे न ? ॥

देखा पुरातन यहा सुझरी-क्रीचा,
अल्फ्रेड-पार्क उससे पर है न नीचा ।
काशी समान पुल बिस्तृत है कमाल,
है "रेल-जकर्शन" जहा बहु गोलमाल ॥

वैसा पुरातन किल्ला अति दर्शनीय,
अक्षय्य है घंट जहा बहु पूजनीय ।
है पास पापहरणी रुचिंग त्रिवेणी^१,
होती पवित्र युवती कर दान बेणी^२ ॥

१ प्रयाग । २ पश्चिमोत्तर प्रदेशकी राजधानी । ३ ग्यूरकालज । ४ भयो ।
५ एक बाजारका नाम है । ६ एक मार्गका नाम । ७ एक पुरातन
शाहा बगाना । ८ सन १८७० में थीमान् द्यूक आफ एडिम्बरोके सन्म
बनाया गया था । ९ रेलवेका पुल । १० बम्बई और दिल्ली आनेवाली रे
लियाका यहाँ मेल होता है । ११ त्रिवेणा सगमके समीप नदीके किनारे पु
बाद्शाही किला है । १२ इसी किलेमें प्राचीन पूज्य अक्षय्यवट है । १३
यमुना और सरस्वतीका सगम । १४ चोटी ।

शार्दूलविश्रीडित

वेणीमोधव, वासुंकी विरेंत हे वैसा भरद्वाज हा !

लेटे हैं हनुमान, लोप युत है देवी अलोपी जहा ।

न्हाके सगममें, मिलाप सका लेके यहासे चला,

आया तीरथ चित्रकूट पथमे, देखा हुआ था भला ॥

३०६

उपजाति

मन्दाकिनी-सुन्दर-रामघाट,

दे ज्ञानसे मुक्ति-विशाल-याद ।

परिऋत्ना कामदेवनाथकी है,

साकी थडी सुन्दर मार्गकी है ॥

२०३

पृथ्वी

पवित्र जलसे भरा भरतकूप, देवार्गेना,

शिलैः स्फटिककी जहा, चरणपादुका शोभना ।

प्रमोदवर्ने दृश्य है रुचिर, रामका चोतेरों,

सुरम्य कपिधोरै है निरस लेयहा—सो तरा ॥

२०७

१, २ प्रसिद्ध स्थान । ३ हटे हुए । ४ एक स्थान । ५ किलके समीप एक हनुमान्की रत लेटी हुई है । ६ देवीका स्थान । ७ यह एक तीर्थ है । ८ नदी परका सुंदर मण्डप । ९ मूर्तिकी चौड़ी सड़क । १० प्रदक्षिणा । ११ इस नामकी पहाड़ीकी । १२ एक स्थान है । १३ यह एक गिला है । १४ यह एक बहुत सुंदर वन है । १५ श्री रामचंद्रसे भरत मिले थे । १६ हनुमान् धारातीर्थ ।

मालिनी

पुनरपि झट आया सडवा मेल छोड़ी,
परिचित लघु गाड़ी सँज थी देर योड़ी ।
समय पर मूँको ला उसीने उतारा,
कुन्ठ कुन्ठ चमका है भाग्यका आज तारा ॥

२०८

शाशिनी

आके देरा फेर इन्दोर सारा,
रस्तेमेंका खेदै सारा विसारा ।
मित्रोंकी ले प्रेमसे भेंद, जाना—
सारा हाल, हेरफेर भाग जाना ॥

२०९

उपसहार ।

मालिनी

सुखद रुचिर ऐसा गजधौनी प्रवास,
ह्रितकर बहु टेके बोध, हो हर्षिवास ।
विगतगति दरिद्री देश सपन्न फेर—
विपुले-विभव होने, श्रीपते । हो न देर ॥

२१०

१ छोड़ी । २ तैयार । ३ थकावट । ४ दुःख । ५ कलकत्ता । ६ कल्याण कर
नेवाला । ७ हृदयमें रहने वाला । ८ निस्तेज, प्रभावहीन । ९ बहुत वैभवशाली ।

शुभ-भावना ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐकाराकृति देशको ॐरूपी नित मान ।
 नमस्कार उसको करू नम्र-भाव चित आन ॥
 मोक्ष न होवे देशका मोह मिटे न अकान ।
 भव-तारक प्रमुके बिना भक्त-भक्त प्रमुरान ॥
 राज पाचाली रक्षके शक्ति दी कर निष्काम ।
 धन कालका काल है वही एक सुख-धाम ॥
 तेजोमय प्रमु आप है तेज न मन्द निदान ।
 वाणी है कविकी वही वाक्पति काव्यनिधान ॥
 सुखका अवसर पायके सुकवि मिलाता देश ।
 देशभक्त कवि देशको देवे हृदय-प्रदेश ॥
 वाणी उसकी दु खरा वाम करे दृष्ट दूर ।
 यही हरे परतन्ता यश देवे भरपूर ॥

जलद बरस भारी खून इस्को रलावे,
पति पिन अगलाको क्यों न कोई सतावे ? ॥

[४]

मधुरकर अन आया मूढ, सर्वस्व खोया ।
विगत-कुसुम-पत्रों मालती छेद रोका ।
अन सुरभि कहा है ? पेड़ सूखा खड़ा है ।
पति विरह कड़ा है, प्राण-आही^१ बढ़ा है ॥

[५]

स्त्रीकी शोभा पति है,
वैसी पतिकी स्वकीय नारी है ।
अन्योऽन्य-भावे ऐसा,
नैसर्गिके, जनमहोपकारी^२ है ॥

प्रश्नोत्तर ।

मधुर भुवनमें क्या ? कीमती धाल-लीला,
मधुरतर सदा क्या ? कामिनी है मुशीला ।
मधुरतम इन्होंसे ? सत्य शब्दार्थ-माला,
अति रुचिर सद्गुण पद माला विशाला ॥

१ भँवरा । २ पृष्ठ और पत्ते नहीं हैं ऐसा । ३ प्राणोंको जलाने वाला । ४ परस्पर भाव । ५ स्वामाधिक । ६ जन महा-उपकारी=लोगों पर बड़ा उपकार करनेवाला । ७ रुचिर-सत्-अर्थ=मुन्दर और अच्छा अर्थ है जिसमें ऐसा ।

चातकी-प्रवाह ।

(चित्तौर-चातकी नामक पुस्तककी गंगाप्रवाह-घटना)

श्लोक ।

(मन्दाकिनान्ता)

कैसा आया फठिनतर हा । दुःखदायी प्रसग ।
हाहा । कैसी जल निच बहू ? छोडके तात-भरग ।
ऐसाही था उचित तुमको क्यों दिया जन्म तात ।
कैसा मेरा अन कर रहे ? हाय हा । प्राण-घात ॥

गंगाजीका सलिल गहरा देखके मृत्यु-घाट,
हा हा । रोई करणग्वसे घातकी छोड हाट ।
है ना कोई इस जगतमें प्राणसा अन्य प्यारा,
वैसाही ना मरण भयसा क्रूर कोई हत्यारा ॥

(शार्दूलविक्रीडित)

कैसे निर्दय राजपूत । तुम हो, मैने बुरा क्या किया ?
बेते हो मुझको यहां, फठिन है कैसा तुम्हारा दिया ? ।

१ पिताका सङ्ग । २ निमाण करना । ३ नाश । ४ पानी । ५ जिस घाटपर से
यहाँ बह, मणिबर्जिका । ६ चित्तौर-चातकी । ७ राजपूत पाक्षिक पत्र ।

स्त्रीका घात किया किसी न नरने, कैसी न क्यों होबुगी,
हा हा ! क्षत्रियके न योग्य कृति है ऐसी महा आसुगी' ॥

मैं निदोष कुलीन शुद्ध गुणको जैसी बनाई बनी,
दोषी है मम तात एक, जगमें कोई न मेरा धनी ।
हो जाता यदि मत्कर-ग्रहण वा, कैसे डुनाते ? कहो !
स्त्रीका रक्षक कौन है पतिनिना, कैसाहि हा ! क्यों न हो ॥

(मांछिनी)

बस बस ! अत्र दूवो बाँच गगा-प्रवाह,
विमल-जल-समाधि-प्राप्ति^१ है स्वर्ग-राह ।
सकल अर्थ तुम्हाग क्षीण होके बसोगी,
अमर-पति-सभामें अप्सरा हो हसोगी ॥

(मदाक्रांता)

हा हा ! डूरी विमल जलमें चातकी हो विरक्त,
गये सारे विरह-भयसे हा ! उपन्यास-भक्त^२ ।
ऐसी लीला चरम इसकी देख, ना कौन मोहे ?
कैसा चित्र^३ प्रकृत इसका भावना पूर्ण सोहे ! ॥

१ राक्षसी १० मेरा कर हस्त का ग्रहण अर्थात् विनय १३ गङ्गाजल में डूबना । ४ पाप ।
५ इन्द्रकी सभा । ६ उपन्यासके प्रेमी । ७ चातकीकी चरमलीलाका चित्र "सरस्वती"
भाग ४ सहा ११ पृष्ठ ४०६ पर दिया गया है । उसीका अनुलङ्घ्य कर यह कविता
लिखा गद् है । ८ विद्यमान, अधिकृत ।

चतुर्भाषी पत्र ।

(सस्कृत, मराठा, हिंदी आर गुजराती)

श्लोक ।

टुप्णोऽह नवनीलिनीरुचिस्त्व मे प्रिया राधिका,
निद्युहामसमा नितान्त रुचिरा आहेस रूपाधिका ।
कैसा योग बना यहा प्रियतमे ! देखो तडित् मेघका,
आवो रेलिशु आज कुजवनमाकेवो वन्यो ओध का ? ॥

घालेनि कठिं तुलसीवनपुष्पमाला,
हस्ते निधाय सरसा नववगयष्टिम् ।
सकेत क्यों कर रहा हमको निहार ?
छे कोन बूर्त्त सरि ! आ ? नहिं नन्द-पुत्र ॥

देरें रम्य बहा प्रफुलित तरु, प्रीत्या गतो वाटिका,
होती तेथ मनोश्च एक तरणी, या पुष्पलावी स्थिता ।
जोईने मधुप प्रयत्न करतो, गुजन्मुखापे भ्रमन,
हा हा ! हन्त ! पपात मूर्छित-तनुर्जाता भयात्सुन्दरी ॥
क्रीडाकन्दुकसन्निभ निजकरे भूगोलमुद्ग्रामयन,
ऐसें विस्तृत भूमि-मडल दिलें माते, न जेयें रवि ।
होवे अस्त कदापि, अद्भुत अहा ! क्रीडा तुम्हारी प्रभो !
हृ हृ धन्य सग रवी रजनिमा जोवे छ मारी प्रजा ॥

का मे माता ? भरत-वसुधा, जेथ मी जन्मलों कीं,
तात को मे ? स्वकुलगृहका धर्म हे मोक्षदायी ।
का मे भाषा ? सकलजननी सस्कृता वाऽथ हिन्दी,
का वा विद्या ? भव-भय-हरा वेदवाणी न दूजी ॥

पदकमल तुम्हारे, फार आहेत गोड,
मरणभय मिटावें, तोडिने कर्म-जाल ।
सकल अघ हमारा, क्षीणता याति तूर्ण,
गुरुवर ! यदि होवे आपका प्रेम पूर्ण ॥

गुलाब ।

अन्योक्ति

(१)

आया गुलाब ! जबसे इस देशमें तू,
सर्वत्र सौरभ दिया बन वश-केतू ।
मोहा न एक अलिही सनकी भुलाया,
क्या मोहिनी-सुरभि-साथ अपूर्व लाया । ॥

(२)

भूले सारे निज कमलको देखके पुष्प तेरा,
मोहे लेके सुरभि, निजको मत्त होके न हेरा । ।
धीरे धीरे चहु दिशि हुए मान सन्मान तेरे,
प्यारा होके शिरपर चढा खूब काटे बिखेरे । ॥

वसन्तपचक ।

(वसन्ततिलका)

आधो वसन्त ! तुमसे सत्र लोग गजी,
 फूले पलाश रमणीय गुलान-राजी ।
 होते न मित्र ! जगमें तुम, वा न आते,
 ऐसे सदा हम कभी हसते न गाते ॥
 भाई वसन्त ! तुमने हमको दिया है,
 आनन्द-गान, उपकार बड़ा किया है ।
 क्या क्या न मित्र ! तुमको हम दें वधाई,
 एकत्र हो सकल खून मजा उड़ाई ॥
 वीणा, मृदंग, करताल, सितार, सार—
 ले हाथमें हम करें स्तुति धारदार ।
 दुराश्रमादि सत्रके हरके, अपार—
 दे हर्ष, कौन तब हो न कृतोपकार ॥
 आनन्द लाभ सम लाभ न अन्य कोई,
 लूटा न हाथ ! जिसने निज शान्ति रोई ।
 देवे वसन्त त्रिन कौन भला वधाई ?
 आनन्दकी सकल ठौर धजा उड़ाई ॥

(यालिनी)

निज मत मत भूलो, गान अरुणिल छोड़ो,
 विनय नय सदाही हर्षके साथ जोड़ो ।

मधु ऋतु जन आवे हर्ष ना कौन पावे ?
सकल मिल रमावे एकताको बढावे ॥

ग्रीष्मवर्णन ।

(शार्दूलविक्रीडित)

आयो ग्रीष्म ! सुहावने तुम बनो, होके घसन्ताऽनुज—
कैसे तापद हो रहें ! किरण ये बर्सायके भानुज ! ।
भ्राताके गुण क्यों लिये न ! उससे क्या हो प्रीती यहा ?
कैसा बन्धु समान मित्र जगमें शत्रु स्वयं होय हा ! ॥

शोभा ली वनकी, हरी पत्रनकी शान्तिप्रदा शीतला,
कीने शुष्क जलाशय, प्रगट की अत्युग्र तेजस्विता ।
चाहें जीव समस्त मस्त मधुको, कोई नहीं आपको,
हा धिरे जीवित ! चाहना न जिसकी, भागी सदा पापको ! ॥

कैसे निर्दय हो ! सभी जन डरे, कोई न लें नामही ।
स्त्रीमें प्रेम जरा न मित्र ! तुमको सोहे जिन्होंसे मही ।
देके कोमल हस्तमें व्यजनको, दे आस कैसे श्री
बारबार करो ? उगास तुमसे सोरे गृहस्थाश्रमी ! ॥

(शिखरिणी)

अहा ! वैसी माला कुसुम-रचिता, चन्द्र-किरण,
हजारा फव्वारा, मलयजरजस्ताप हरण ।

निराजे अर्धांगी व्यजन-भृत-हस्ता शयनमें,
परन्तु प्रीप्सुर्तु प्रत्तर करती ताप तनम ॥

(मन्दाक्रान्ता)

आनो प्रीप्स ! क्षणिक तुम हो, कूच होगा यहासे,
जावो ऐसी कृति कर सदा मित्र ! कोई न हासे ।
दोही घातें इस जगतमें वा घुरी वा भली है,
पाई शोभा तुम न, मधुकी-क्या किसीको मिली है ? ॥

मेघ-स्वागत ।

(मन्दाक्रान्ता)

आवो आवो प्रिय ! तुम यहा, स्वस्ति है मेघराज !
सारे दुःखी तुम निन सरे । सूझता है न काज ।
ढेके प्यारे ! सन जगतको जीवन प्राणकारी,
रक्षो मित्र ! प्रणति तुमको, हो प्रजा सौल्यकारी ॥

(शादुलविकीडित)

देखें ये कृपक-खिया प्रणयसे होठे सदा सादर,
नाचें मोर पसार पर, उड़के पक्षी करें आदर ।
आये चातक सामने, पिक करें सन्मान आलापसे,
श्रीमन्मेघ ! दयार्द्र धन्य तुम हो, सारे सुखी आपसे ॥

कलकत्तेकी मारवाडी एसोसिएशन ।

दोहा ।

एसोसिएशन नामको, मारवाड जन धार ।

कामर्सकी चेम्बर बने, करने देश सुधार ॥

सुनके नाम विचित्र यह, अचरज हुआ अपार ।

क्या भाषा अपनी बनी, शब्द-शेष नि सार । ॥

खाली लेके नामको, बने हमारे लोग ।

क्या अमेज सुहावने । करने मौज अजोग । ॥

क्या कीनो हित देशको, अथवा जाति-सुधार ।

धर विदेशी नामको, क्या पायो आधार । ॥

विद्या सीखी ना गयो, मोह बन्यो अग्यान ।

राहरीति सुधरी नहीं, गाली गीत भडान ॥

अपने मुखसे स्त्री बके, नीच शब्द अश्लील ।

शोभा क्या इसमें बढे । होते जन दु शील ॥

स्त्रीको शिक्षण क्या दियो, क्या कीनो उपकार ।

कितनी बैठी हाटमें, स्त्रियाछोड घरबार । ॥

धन्यापुत्र-विवाहकी न सुधरी गीति, स्वकीयोन्नति,
कीर्ती न, प्रमदाप्रचार सुधरे, ना धर्ममें सन्माति ।
गाने धन्द हुए न शुद्ध कुल्में वे गीत अश्लील वा,
खाली नाम 'असोसिएशन' लिया । अद्धा बढी ना लवा ॥

यात्रा लडनकी अभीष्ट बनने क्या योग्य बेरिस्टर ?
क्या बाबू बनने उतार पगढी होके बडे मिस्टर ।।
लेडीका कर हाथमें पन्डके बार्किंग तुम्हें इष्ट है ?
छोडो ये उनके प्रचार, कृतिको लेवो यही इष्ट है ॥

जैसा साहस नाम धार तुमने प्यारे । किया है यहा,
वैसे शीघ्र दिरगायिये स्वष्टतिको होके यशस्वी महा ।
वैसा है अपना समाज पतित—प्रत्यक्ष देखो जग,
दु खप्रस्त हुआ, कुरीति-पथसे छाई सभी पै जरा । ॥

(मालिना)

प्रभुवर ! यह मेरी प्रार्थना हाथ जोड,
मरुधर मुजनोंकी भूढता शीघ्र तोड ।
प्रवर कर उन्हींका बश, विगा, विचार,
युवति जन सदा हो श्रेष्ठ रीति-प्रचार ॥

देश-दशा ।

श्लोक ।

है धर्म, देश, जन सर्व विराजमान,
है भूमि, अन्न, जल, औषधि विद्यमान ।
है शास्त्र सत्पथ अभी सबका समान,
हा-हाय ! किन्तु रति क्यों न निजाभिमान ? ॥

है आज देश किस घातक वेदनामें ।
हा ! फूट क्या बढ़ रही विगड़ी दशामें ।
कोई सहायक नहीं, किसका न मित्र,
होता चला प्रतिदिन क्षय सच्चरित्र ॥

क्या क्या कुरीति अपने कुलमें चली है,
कैसा सुधार करना ? रति क्यों ढली है ? ।
भूलें सदा हम हमें, कुल, जाति, देश,
कोई सुने न, करता स्वहितोपदेश ॥

क्या था अपूर्व जगमें अपना स्वदेश ?
सर्वोच्च था, धनिक था, कृषि-सत्प्रदेश ।
हाहा ! दशा अरु हुई इसकी विचित्र,
कोई सहायक नहीं, इसका न मित्र ॥

क्यों जानते न अपना हम देश-काज ?
 क्यों हो गया अहह ! लुप्त निजत्व आज ? ।
 कैसे बने हम दरिद्र, सुदीन, हीन ?
 क्यों धनुभाव, समता हमसे विहीन ? ॥
 क्यों सद्बिचार तजके मति हृत्पदेश—
 जाके वसे विनय, शिक्षण अन्य देश ? ।
 व्यापार हा ! अब कहा ? रति है हमारी ?
 भूखे मरें हम सदा कर जानमारी !! ॥
 सट्टा करें वन दलाल विचित्र धन्धा,
 लूटें गरीब—उनको कर खूब अन्धा ! ।
 जानें न धर्म अपना, कृपि, वैश्य-वृत्ति,
 गोरक्ष्य, देश-हित-कारक सत्प्रवृत्ति ॥
 होगा यहा जब कभी प्रभुका मसाद,
 होगा सुधार तबही हटके प्रमाद ।
 हे सर्वशक्ति परमेश्वर ! हे कृपाल !
 होके प्रसन्न अब तू हमको सभाल ॥

॥ श्री ॥

प्रवास-कुसुमावलीके प्रथम गुच्छके कुछ
अभिप्रायोंका सारांश ।

—१९०४—

१ श्रीमान् रायबहादुर मुन्शी नानकचन्द साहब, सी आर्म् ई माइम्
मिनिस्टर, इन्दोर स्टेट—ता० २७-९-०४

एक प्रति “प्रवासकुसुमावली” की पहुंची । साद्यन्त पढ़ी ।
निहायत खुशी हाँसिल हुई । आपकी कविता बहुतही रसीली और
सरल है । अगरेजीमें जैसी “क्वपर कवि” की तारीफ है वही हाल
आपका है । इसी तोरसे आप लिखते रहेंगे तो हिन्दी भाषाकी
कविता पुरानी नहीं होने पावेगी ।

२ श्रीमान् बाबू तुलापतिसिंह, माइवेट सेकटरी महाराजा दरभङ्गा—
ता०-२२-९-०४

I have read it with great interest and have much
pleasure in saying that it is worth reading

३ श्रीमान् कमलानन्दसिंह, राजा साहब श्रीनगर पुर्निया—
ता०-२५-९-०४

आपकी भेजी हुई “प्रवास-कुसुमावली” कलकी डाकसे मेरे पास
पहुंची जिसे धन्यवादपूर्वक स्वीकार कर मैं अत्यन्त आनन्दित हुआ ।

* * * * * मैं दत्तचित्त हो आपकी कवितार्य आयो
 पान्त पद गया । यद्यपि आजकल समवृत्तमें हिन्दीभाषाई कवि
 ताओंका प्रचार बहुत कम है तथापि आपने अपनी इस रचनाके
 द्वारा अच्छा कवित्वकौशल दिखलाया है । शब्दको बिना बिगाड़े हुए
 समवृत्तमें हिन्दीका शुद्ध कविता करनी सहन नहीं है । मेरी समझमें
 तो आपकी कविता बहुतही रोचक हुई है और प्रसाद गुणमें
 भूषित । छन्दमें भी कहीं कुछ गड़बड़ देखनेमें नहीं आता ।
 शब्दविन्यास भी उत्तम रीतिसे किया गया है जो पढ़नेमें अत्यन्त
 प्रिय मालूम होता है । “प्रवासकुसुमावली” से इतिहास सक्न्धी अनेक
 बातें विदित होती हैं, और भी कई प्रकारके नये नये भाव न्यजित
 होते हैं । “चातमी प्रवाह” पर जो आपने कविता की है वह विशेष
 हृदयग्राहिणी हुई है । चतुर्भाषी पद्य भी भावसंगठित है तथा आपकी
 अनेक भाषाका पाठन तथा कवित्वशक्तिका अभिव्यजन है ।

आपका एतद्विषयक उत्साह और परिश्रम सर्वथा प्रशंसनीय है ।
 इसमें कुछ संदेह नहीं कि आपने मारवाड़ी बोलीमें भी “केसरविलाम”
 आदि अनेक पुस्तकें रचकर अपने देशका गौरव बनाया है ।

४ पंडित माधवप्रसाद मिश्र, भिवानी-ता० २५-९-०४

आपकी प्रवासकुसुमावली कुसुमोंकी आवली होने परभी हृदयहारिणी
 कुसुममाला है । जितनी यह अभिनव है उतनी पुरातन इतिहासकी
 अभिव्यजक है और जितनी सरल है उतनी रसवती है । आपका यह
 पुष्पहार किम रसिकके हृदयका आभूषण न होगा और किम
 सन्देहके कठकी शोभा न बढ़ावेगा ?

५ श्रीमान् मुन्शी देवीप्रसाद साहब, जोधपुर-ता०-२८-०-०४

* * * आपकी कविता खड़ी बोलीमें हे इससे उम
उद्देश्यकी मृग उन्नति होगी जो देशहितेषी लोग कर रहे है। इतिहासके
प्रमाणभी आपने ठीक दिये हैं। * * * * *

६ भारतजीवन, काशी-ता०-२६-९-०४

मारवाडियोंके सुधारके लिये मारवाडी भाषामें पुस्तकें लिखने-
वाले अग्रवर्ती बाबू शिवचन्द्र भरतियाने यह "प्रवास-कुसुमावली"
हिंदी कवितामें लिखी है। कविता संस्कृत वृत्तोंमें है और सरल,
उपयोगी है नमूना देखिये-

* * * * *

कविता पढ़ते समय स्थान स्थानपर कनिष्ठी योग्यता, देशहितैषिताका
स्पष्ट परिचय मिलता है। पुस्तककी छपाई सफाई बहुत बढ़िया है।

* * * * * हम अपने पाठ-
कोंसे अनुरोधपूर्वक कहते हैं कि वे एकवार इस किताबको
अवश्य देखें।

७ श्रीवेंकटेश्वर समाचार, उम्बई-ता०-१४-१०-०४

हिन्दीके पाठक बाबू शिवचन्द्र भरतियासे अपरिचित नहीं हैं।
आपने जिस प्रकार मराठी कवितामें नाम पाया है, मारवाडी बो-
लीमें पुस्तकें लिखकर प्रशंसाका काम किया है, उसीप्रकार स-
ंस्कृतपद्यरचनाकाभी अभ्यास करके हिंदीमें कविता करनेमें सफलता
प्राप्त की है। यह प्रवास कुसुमावली उन्हीं बाबू शिवचन्द्र भरतिया
की लिखी हुई है। इसमें उन्होंने अजमेर, कुष्माण्ड, जयपुर, मे-

वाड और जोधपुरकी यात्राका वर्णन तथा वहाके देखे हुए दृश्योंका चित्र खर्ची बोलीके गणवृत्तोंमें किया है । * * * कोई कोई पद्य ऐसे है जो हृदयको बिल्कुल तर्लान बना देते है । विशेषकर ६१ से ६७ तककी कविता तो बहुतही अच्छी बनी है । अन्तमे मालती और चातकीप्रवाहकी कविता दी गई है । चातकीप्रवाहकी कविता पढ़तेही उपन्यासी अगड़ेकी सब बातें तार्जी हो जाती हैं और चातकीका विलाप हृदयमें ऐसा स्थान कर लेता है कि सहसा ईश्वरसे यही प्रार्थना करनेकी इच्छा होती है कि हे ईश्वर ! हिन्दीके लेखकोंको मुमति दे जिससे अब चातकीकी ऐसी घृणित पुस्तके हिन्दीमें न निकलें और न हिन्दी साहित्यमें इस प्रकार पुस्तकप्रवाहकी घटनाका अवसर आवे । * * * *

८ श्रीमान् सेक्रेटरी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी—

ता०-७-७-०५

आपकी प्रवास-कुसुमावलीका नाम सभाने इस वर्षकी प्रशस्तित पुस्तकोंमें सम्मिलित किया है और इसका उद्देग्व इस वर्षकी वार्षिक रिपोर्टमें होगा ।

९. केसरी, पना-ता०४-१०-०४

प्रवासकुसुमावली—(हिन्दी) हैं शिवचन्द्र भरतिया यानी लिहिलें सदर गृहस्थास मारवाडी, मराठी, हिन्दी व सस्कृत भाषा उत्तम येत अमुन त्या चारही भाषान त्यानीं काव्यें केळीं

आहेत. ह्या पुस्तकात श्लोकादि वृत्तान हिन्दीमयें कविता
करण्याची नवी प्रवृत्ति यांनीं घातली आहे

० काळ, पूना-ता०-१-२-०५

प्रवासकुसुमावली -हें एक हिंदीमधील कवितांचे पुस्तक आहे
शिवचंद्र भरतिया हे त्याचे कर्ते आहेत. समृद्धमंगील वृत्ते घेऊन
यांनी हिंदीमध्ये सुलभ पद्यरचना केलेली आहे. पुस्तकाचे बाह्यांग
आणि अंतरंग दोन्ही मजुर आहेत

॥ श्री ॥

मारवाडी भाषाकी अपूर्व पुस्तके

इनाम १०००) रुपया ।

(मारवाडी भाषामें एक नई चीज)

फाटकाजनाल नाटक ।

—०५२०२३०३ ०३००५१०—

मारवाडी भाषा तो कुछ चीज नहीं—परंतु बगाली, मराठी, गुजराती अथवा हिंदीमेंभी इस नाटकके समान आगे उपी हुई पुस्तक कोई महाशय दिखा देगा तो उसको उपर्युक्त इनाम दिया जावेगा ।

इसमें मारवाडी जातिकी गृहस्थिति, चालचलन, रहनसहन तथा व्यापार आदिका—पांच मनोहर फोटूके चित्रोंके साथ भावपूर्ण उपदेशमय चित्र खींचा गया है, जिसको पढ़तेही चकाचौध दूर होके हृदयमें प्रकाश पड़ जाता है ।

इस पुस्तककी जिल्द पक्की, रंगबरगी कीमती कपड़ेकी तीन सुनहरी नामों सहित और ऊपर भगवान श्रीकृष्णचंद्रकी मनमोहनी मूर्तिके साथ बनाई गई है जिसको देखतेही मन मुग्ध हो जाता है । डेमी साइनके २५० से अधिक पृष्ठ हैं । उपाई मोठे अक्षरोंमें बहुतही साफ और सुन्दर है । देश भाषाओंमें शायदही कहीं ऐसी पुस्तक उपी हो ।

कीमत रुपया २) डाक खर्च ।=)

बुढ़ापा की सगाई नाटक ।

—०१२३४५६७८९१०—

इसमें—मारवाड़ी जातिमें सगाईके क्या प्रकार होते हैं, बचपनमें सगाई करनेसे क्या क्या अनर्थ होते हैं—उसका चित्र खींचा गया है । स्त्रियोंकी स्वतंत्रताकी सीमा, उसका परिणाम, वृद्धावस्थामें विवाहकी इच्छा, उसका बंधन और उस बंधनका परिणाम जहां तहां प्रदर्शित किया है ।

पुस्तकमें सर्वत्र नीति, उपदेश, बोध, धर्म और शास्त्रका विचार किया है । भाषा इतनी सरल और स्वाभाविक रखी गई है कि उसकी कृत्रिम रचनाका कुछ भास नहीं होता । और मानो यह कोई सत्य घटना है ऐसा प्रतीत होता है ।

पुस्तक बहुत सुन्दर अच्छे कागजपर छपी है । सवासोसे अधिक पृष्ठ हैं । कीमत ।=) आना ढाक खर्च =) आना ।

पुस्तकें अब बहुत थोड़ी रह गई हैं इस लिये जल्द मगाकर इससे आनन्द लाभ करें ।

कनक सुन्दर ।

—०१२३४५६७८९१०—

यह एक मारवाड़ी भाषाका एकमात्र भावपूर्ण उपन्यास है । इसमें ईमानदारीसे व्यापारमें मनुष्य कैसी तरकी और धन कमा सकता है उसका खाका खींचा गया है ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तकके उपदेशके अनुसार चलनेवाला अवश्यही धनमय होके अपना और अपनी जातिके अच्छा सुधार कर सकेगा ।

पुस्तक सुंदर फोटोके चित्रके साथ बहुत सुन्दर छपी है । कीमत ॥) ढाक खर्च =) आने ।

केसरविलास नाटक ।

(दूसरी आवृत्ति)

—३२५—

वैसाही सुन्दर और मोटे कागजपर छपा है । पहिलेसे पुस्तक दुगनी देख पडती है । कीमत वही रुपया १॥ डाक खर्च ॥

प्रवास-कुसुमावली ।

(प्रथम गुच्छ)

—३२६—

गणवृत्तोंकी कवितामें मारवाड, मेवाड आदिके वीर पुरुषोंका वर्णन किया गया है । पुस्तक आर्टिपेपर पर बहुतही सुन्दर छपी है । कीमत ॥ आना, डाक खर्च २॥

सब पुस्तकोंके मिलनेका पता—

शिवचन्द्र भरतिया,

इंदोर (मालवा)

